सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 13 ▪ ▪ अंक : 8 ▪ ▪ 5 नवम्बर : 2016 ▪ ▪ मूल्य : 20रू. ▪

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन

के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...

सूरीमंत्र साधना पूर्णाहूति की झलकियाँ

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए॥

– दशवैकालिक 6/11

अपने या औरों के लाभ के लिए, क्रोध से या भय से ऐसा असत्य न बोला जाए या औरों से न बुलवाया जाए जिस से हिंसा हो।

One should not, either through anger or through fear, lie or encourage others to lie, which may lead to violence, even if it is for the benefit of one's own self or that of someone else.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. जीवेम शरदः शतम्	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	05
3. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	06
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	08
5. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	09
6. आत्मीयता का आईने में...	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
7. गुरुवर्याश्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.	साध्वी विरागज्योति विश्वज्योतिश्रीजी	17
8. गुरु गुण गीतिका	दिव्यप्रभा साध्वी मण्डल	22
9. म्हारा गुरणीसा हो राज	साध्वी विशालप्रभाश्रीजी म.सा	22
10. जन्म-दीक्षा दिन की बधाई	साध्वी विशालप्रभाश्रीजी म.सा	23
11. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	25
12. जीवन का पुष्प...सेवा की सुगंध	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा	29
13. भंसाली गोत्र का इतिहास	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	34
14. चुल्लग शतक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	37
15. विद्वद्वशिरोमणि महो. श्री क्षमाकल्याणकजी म.	आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.सा.	39
16. समाचार दर्शन	संकलन	43
17. गच्छाधिपति श्री के चरणो में	कु. कीर्ति वैद, रायपुर	52
18. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	54

जहाज मंदिर मांडवला नगरे

गुरु सप्तमी मेला प्रसंगे

वि.सं. 2073 मिगसर वदी 7 रविवार 20.11.2016

सकल श्रीसंघ को भावभीना आमन्त्रण

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 8 5 नवम्बर 2016 मूल्य 20 रू.

संयोजन :

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com

www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु प्रचार मंत्री

कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई

से संपर्क करावें।

मो. 094447 11097

नवप्रभात

हमें चिंतन करना है कि किसी की गलती नजर आने पर हमारा व्यवहार क्या होता है और क्या करना चाहिये! इन दोनों बातों में बहुत अन्तर है।

दूसरों की गलती बहुत आसानी से नजर आती है। इसके दो कारण हो सकते हैं- 1. गलती है तब नजर आई 2. हमारी दृष्टि वैसी थी, इस कारण गलती न होने पर भी नजर आई।

हमें अपने विचारों की समीक्षा करनी चाहिये कि जब मुझे किसी दूसरे की कोई छोटी या बडी त्रुटि नजर आती है, तब मुझे क्या करना चाहिये!

हमारे पास चार विकल्प हो सकते हैं-

1. गलती को सुधारने के लिये योग्य प्रयत्न करना।
2. गलती की उपेक्षा करना।
3. गलती जिसने की उसके प्रति उपेक्षा करना।
4. गलती का प्रचार करना।

चिंतन करें, हम कौनसे विकल्प का चुनाव करेंगे।

इन चारों विकल्पों में से प्रारंभ के दो विकल्प बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि उन्हें अपनाया जाता है तो हम अपने जीवन को रोशनी से भरते हैं।

1. जिसने गलती की, उसे योग्य व्यवस्था से समझाना ताकि उसे गलती का अहसास हो... और वह भविष्य के लिये गलती न करने का संकल्प करे। इस विकल्प में अपनत्व की खुश्बू है।
2. दूसरे विकल्प में ममत्व का बोध है। जिसने गलती की है, उसके प्रति आपका ममत्व है। इस कारण सोचते हैं कि हो जाता है, कभी कभी.. चलो.. छोडो.. गलती को नजरअंदाज करो। इस विकल्प में सुधारने की कोई प्रक्रिया नहीं है। उसे अहसास कराने का भी लक्ष्य नहीं है। यह विकल्प भी अच्छा है। पर इसमें गलती को प्रश्रय मिलने की संभावना बनी रह सकती है।
3. तीसरे विकल्प में परायापन झलकता है। मेरा क्या लेना-देना... भैंस के श्रृंग भैंस को भारी! इस विकल्प को स्वीकार करने वाला उस व्यक्ति की पूर्ण रूप से उपेक्षा कर लेता है।
4. चौथा विकल्प सबसे खतरनाक है। इसमें शत्रुता की बू आती है। वह व्यक्ति अपनी आंख को कैमरे की तरह उस व्यक्ति पर गडा बैठा था कि कोई गलती नजर आये और मैं प्रचार करना प्रारंभ कर दूं। उसके हृदय में उस व्यक्ति की गलती कम, वह व्यक्ति ही ज्यादा खटकता है।

चिंतन करना है कि हमारी नजर कौन-से विकल्प पर टिकती है। वही हमारे व्यक्तित्व का मापदंड होगी।

जीवेम शरदः शतम्

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जीवेम शरदः शतम्

पूज्य गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में वि. सं. 2036 में बाड़मेर चातुर्मास के पश्चात् वहाँ से पालीताना के लिये छह री पालित संघ का आयोजन हुआ था। उस संघ में काफी साधु साध्वी थे। काफी साधु साध्वी बाड़मेर से ही सम्मिलित थे तो काफी विहार–पथ में सम्मिलित हुए थे।

रास्ते में साध्वी श्री दिव्यप्रभा-श्रीजी म. व उनके सांसारिक बहिन साध्वी श्री विशालप्रभा-श्रीजी म. सम्मिलित हुए थे।

श्री दिव्यप्रभा-श्रीजी म. का नाम पूज्य गुरुदेव-श्री से बहुत बार सुना था। पूज्य गुरुदेव-श्री उनके लिये फरमाते थे कि वे बहुत विदुषी हैं...संस्कृत व प्राकृत का अच्छा बोध है। वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन साधनिका के साथ उन्होंने केवल एक साल से भी कम समय में कर लिया था। सुनकर अचरज होना स्वाभाविक था। क्योंकि कुशाग्रबुद्धि व्यक्ति को भी इसके अध्ययन में कम से कम दो वर्ष तो लगते ही हैं।

पूज्य गुरुदेव-श्री ने आदेश दिया था कि इस बार चातुर्मास साथ होगा तो तुम्हें उनसे प्राकृत पढना है।

पालीताना चातुर्मास में उनके साथ बैठकर प्राकृत भाषा के पाठ किये थे। उसके बाद तो उनका निश्छल प्रेम बढता गया।

वे हर परिस्थिति में बिना किसी शर्त के हमारे साथ रहे। उनका स्वभाव बहुत अलग है। कोई परिग्रह नहीं, कोई प्रोजेक्ट नहीं, नाम की कोई कामना नहीं! अनुशासन उनके हर कदम में टपकता है।

पिछले दिनों पालीताना में हुए खरतरगच्छ सम्मेलन के समय सभी साधु–साध्वियों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए महत्तरा पद से विभूषित करने का निर्णय लिया। इस पद को ग्रहण करने की स्वीकृति प्राप्त करने के लिये मुझे सख्त आदेश देना पड़ा था। मुझे एक योग्य साध्वीजी को योग्य पद प्रदान करके प्रसन्नता की अनुभूति हुई थी।

निश्चित रूप से गच्छ व समुदाय ऐसे त्यागी, निस्पृह एवं विदुषी साध्वीजी महाराज को पाकर गौरवान्वित है। उनका मार्गदर्शन लम्बे समय तक प्राप्त होता रहे... जन्म व संयम दिवस के अवसर पर वर्धापना अर्पण करने के साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना दादा गुरुदेव से है।

गुरुदेव की कहानियाँ

कर्म रेखा

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

बाल राजा को सविनय हाथी पर बैठने का आग्रह किया। राजा सतेज हाथी पर विराजमान हुआ। नारियों ने मंगल गीत गाने प्रारंभ किये। शाही जुलूस गन्तव्य स्थानों पर होता हुआ राजसभा में पहुँचा। मन्त्री ने राज सिंहासन पर विराजमान होने के लिये निवेदन किया।

पद मानव को स्वत: योग्य बना देता है। यद्यपि रेखसिंह नादान था, पर पुण्योदय ने उसे परिस्थिति के अनुरूप योग्य बना दिया था। मन्त्री ने रेखसिंह के सिंहासनारूढ़ होने पर अपना नपा तुला वक्तव्य सुनाया। नूतन राजा के एक बार पुन: गगनभेदी जय घोषणा के साथ ही उस दिन की सभा विसर्जित की गयी।

राज्य के मन्त्री ईमानदार और राज्य भक्त थे। उन्होंने रेखसिंह की अवस्था देखकर उसके योग्य प्रखर विद्वान पंडित की नियुक्ति कर दी। प्रज्ञावान राजा तुरन्त ही पाठ्य विषयों को ग्रहण कर लेता। शस्त्र, अस्त्र आदि विद्याओं में भी पूर्ण निपुण बन गये। लम्बे समय से मन्त्री के हाथों में रही हुई राज्यधुरा को स्वयं ने ग्रहण कर ली। वे सम्पूर्ण कौशल से प्रजा का पालन करने लगे।

चूँकि उन्होंने तंग परिस्थितियाँ भोगी थी अत: वे और भी अधिक बारीकी से गरीबों के दर्द को समझते थे। उन्होंने दानशाला, भोजनशाला, विद्याशाला आदि स्थान-स्थान पर खुलवा दीं। तालाब आदि की भी पूर्ति की गयी। प्रजा आनन्द मना रही थी। यश फैल रहा था पर अभी तक कई स्थानों से कुमार राजा के विवाह के आमन्त्रण होते हुए भी राजा अविवाहित थे।

इधर रेखसिंह को भगाकर उन जल्लादों ने एक मृत हरिण की आँखों निकाली और सम्राट को सुपुर्द कर दीं। राजकुमारी यह खबर सुनते ही आनन्दित हो गयी। उस ने मन ही मन सोचा-अब पंडितजी की भविष्यवाणी सत्य कैसे होगी?जब कारण ही परिममाप्त हो चुका है तो कार्य की निष्पति कैसे संभव है?अब तो मेरा दूल्हा किसी देवकुमार से कम नहीं होगा। राजकुमारी की कल्पनाएँ आकाश को छूने लगी।

उसने अपना अध्ययन उसी गति से जारी रखा। धीरे-धीरे वह युवावस्था की दहलीज पर कदम रखने लगी। राजा को उसके अनुरूप दामाद की चिंता ने पकड़ लिया। उसने मन्त्रणा कर उसके योग्य राजकुमार ढूंढने ने लिए दूत रवाना कर दिया। घूमता हुआ दूत रेखसिंह के पास आया। चूंकि अब वह सम्पन्न था। भाविनी से भी बडे राज्य का अधिपति था अत: रेखसिंह भी परीक्षा की श्रेणी में आ गया था।

राज्य सभा भरी हुई थी। और प्रजा से प्रशंसित रेखसिंह के असीम करिश्मों को सुनते हुए दूत ने राज्य सभा में प्रवेश किया। शिष्टाचार के पश्चात उसने अपने राज्य और राजकुमारी के गुण वर्णन के साथ आने का उद्देश्य भी स्पष्ट कर दिया।

राजा ने ज्योंहि ये बातें सुनी। तुरंत चमका! पर तुरन्त ही अपने भावों को छिपा लिया। दूत को रेखसिंह हर दृष्टि से उपयुक्त लग रहा था। अब तक अविवाहित था अत: भाविनी ही पटट्रानी और राजमाता का गौरव प्राप्त करने वाली थी। राज्य भी बड़ा था। उम्र में भी समानता थी। अत: दूत ने नम्रता के साथ निवेदन किया। मन्त्री और अन्यान्य राजसभ्यों को भी यह रिश्ता भा गया। वे सभी रेखसिंह की ओर आशा भरी नजरों से निहारने लगे।

राजा ने समय की नब्ज को पहचाना और बडी मिठास के साथ कहा, ''हमें यह सम्बन्ध स्वीकार है, पर शर्त के साथ?''

दूत ने कहा, ''राजन! आपकी शर्त क्या है?''

राजा ने कहा, ''हम अपनी बारात लेकर आपके शहर नहीं आयेंगे। अगर आप यहाँ आकर शादी की रस्म अदा करना मंजूर करो तो मुझे स्वीकार है।''

दूत ने कुछ देर सोचा। यद्यपि शर्त अटपटी थी परंतु भाविनी के भविष्य के लिये उन्हें स्वीकार करने में कोई अड़चन महसूस नहीं हुई। उन्होंने यह शर्त स्वीकार कर ली

और अपनी नगरी में लौट आये। राजा ने सारा वृत्तान्त सुना। अपनी इकलौती, प्राणप्यारी पुत्री के सुखद भविष्य के लिए उन्हें भी यह शर्त बुरी नहीं लगी। उत्साह के साथ सभी तैयारियों में जुट गये।

शुभ मुहूर्त में राजकुमारी के साथ वहाँ से सभी रेखसिंह के राज्य में आ गये। रेखसिंह के तेज और उम्र तले अतीत का सारा परिचय दब गया। कोई भी रेखसिंह की वास्तविकता को नहीं जान पाया। आनन्द और खुशियों के साथ पाणिग्रहण सम्पन्न हुआ।

करमोचन वेला में सम्राट ने अपने राज्य के कुछ भाग के साथ और भी अनेक प्रकार का दहेज दिया।

चारों ओर उल्लास था। भाविनी के पितृपक्ष वाले समस्त रस्मों की अदायगी के पश्चात् लौट गये और भाविनी अतीत से वर्तमान में लौट आयी।

भाविनी को लगा-त्रुटि तो मैं कर चुकी पर अब तो उस भूल को सुधारना ही बुद्धिमत्ता है। उसने नम्र आवाज में कहा- ''स्वामी अगर मैं आपको अपने षडयन्त्र का निशाना नहीं बनाती तो क्या इतने विशाल साम्राज्य के स्वामी आप बन सकते थे?देव! आपके साथ मैंने भयंकर अपराध किया है पर आप अगर मेरे से अपना बदला लेंगे तो आप में और मुझ में अन्तर ही क्या रहेगा?आप क्षमा कर दो और अपने चरणों में स्थान दो।''

रेखसिंह तेजस्वी होने के साथ-साथ क्षमाशील भी था। भाविनी के व्यथा से सने शब्द सुनकर उसका हृदय पसीज गया। उसने भाविनी को अपने पाँवों में से उठाया और कहा- ''देवी! तुम्हारा स्थान पाँवों में नहीं, दिल में है। पर तुम्हारे साथ हमारा मिलन तभी संभव है, जब तुम हमारी माँ को यहाँ ले आओ। मैं अपनी माँ से मिलने के लिए बेताब हो रहा हूँ।''

मेरी प्रतिज्ञा थी कि जब तक कि मैं अपनी मां को नहीं देखूं तब तक ब्रह्मचर्य पालूंगा।

भाविनी ने रेखसिंह की चरण रज ली और उसी समय सुहागकक्ष से निकल गई। वह तुरन्त अपने पीहर के पड़ाव में आई, जहाँ राजा ने अपने कुछ सैनिकों को रख दिया था। वहाँ से एक सवारी और एक पथ प्रदर्शक साथ में लिया और अपनी सासु के झौंपड़े में पहुँची।

बुढ़िया जो अपने पुत्र वियोग में रो-रोकर अंधी हो चुकी थी, उसने आवाज सुनी तो खड़ी हो गयी और पूछा- ''कौन?''

''मैं भाविनी!'' यह कहते-कहते भाविनी ने सासु के चरणस्पर्श किए।

सासु हक्की-बक्की रह गयी। फिर बोली-''डायन! अब क्या बाकी रह गया है। मेरे बेटे को तो तूं खा गई।'' बिना उत्तेजना के भाविनी ने कहा-''माताजी! आपका पुत्र सकुशल है। उन्हीं के साथ मेरा पाणिग्रहण हुआ है। मैं आपको लेने आई हूँ। आप तुरन्त चलिए।''

बुढिया की आंखें खिल गयी। उसने बहू को अपने सीने से लगाया और तैयार होकर चल पड़ी। रातोंरात पुनः रेखसिंह के महलों में सास-बहू पहुँच गये।

सभी आपस में मिले। रेखसिंह अपनी माँ के चरणों में झुक गया। आसपास एक आवाज गूँज रही थी ''भाविनी कर्मरेखा।''

कर्मरेख कौन मिटा सकता है?

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

भोग और दु:ख, दोनों अनित्य हैं...

ण मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ,
असासया भोगपिवास जंतुणो।
ण मे सरीरेण इमेणऽविस्सइ,
अविस्सइ जीविय पज्जवेण मे ॥१६॥

जिस प्रकार संयम में उत्पन्न अरति अनित्य होती है, वैसे ही वैषयिक सुखों और भोगोपभोगों की लालसा भी अनित्य होती है।

आज तूं स्वस्थ और नौजवान है। पांचों ही इन्द्रियाँ सुचारू ढंग से काम कर रही हैं। इस कारण तुझे रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द में आनंद की प्रतीति हो रही है, पर जब ये ही इन्द्रियाँ थककर चकनाचूर हो जायेगी। बलहीनता और बुद्धिहीनता का जब आक्रमण होगा, तब तुझे इन काम भोगों में किसी प्रकार से रस की अनुभूति नहीं होगी।

कदाच् वृद्धावस्था में भी तेरे मन में इन्द्रिय सुखों और भोगों का आकर्षण बना रहेगा तथापि जीवन का अन्त तो होना ही है। जब यमराज की घण्टी बजेगी, तब तेरे पाँवों तले की जमीन खिसक जायेगी। भोगों के वियोग और दुर्गति के संयोग की कल्पना मात्र से तेरा रोम रोम सिरह उठेगा। दिन के उजाले में भी तेरी आँखों के सामने घोर अंधेरा होगा।

हाय! मैं लूट गया।
हाय! मैं मर गया।

अरे! कोई तो बचाओ। कोई तो मुझे अपनी गोद में छिपा लो।

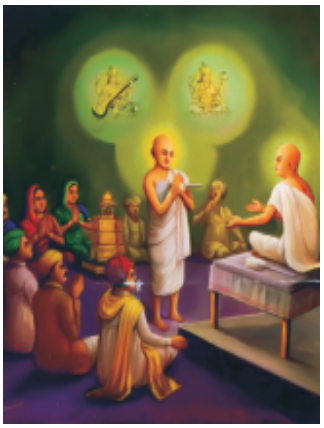

तूं माथा फोडेगा, कपडे फाडेगा, बाल खिचेगा, हाथ-पाँव पछाडेगाा, , हाथ जोडकर जीवन की भीख मांगेगा पर कोई भी बचा न सकेगा। भयंकर क्रोध, महाभय, दुर्ध्यान, कृष्ण लेश्या और रौद्र परिणाम में मरकर तूं नरक में जायेगा या फिर सिंह, सांप, बाघ,शृगाल जैसे पापकारी भवों में दु:खों की परम्परा की विस्तार करेगा।

जीवन अनित्य है, अत: भोगों की वासना भी अनित्य है। संसार के भोगों के भाँति संयम के परीषह भी अनित्य है। मुनि! तुझे पावन उपकरण रजोहरण आदि का त्याग करने से पहले एक बार अच्छी तरह सोच लेना चाहिये।

महत्तरा पद विभूषिता ख्रान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस पर हार्दिक बधाईयां ...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
तुम जीयो हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार
गौतम - सौ. सीमा, रमेश कुमार, दिलीप कुमार पायल, लब्धि एवं
समस्त भंसाली परिवार की ओर से कोटि.. कोटि वंदन...
फर्म : गौतमचंद्र, रमेशकुमार, दिलीपकुमार भंसाली
80, तिरपल्ली स्ट्रीट, तीसरा माला, चैन्नई- 79 (मरूधर में लोहावट) दुरभाष :- 9444052968

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन

आप अकर्ता सेवाथी हुवे रे,सेवक पूरण सिद्धि।
निज धन न दिये पण आश्रित लहे रे, अक्षय अक्षर रिद्धि ।६।

हे प्रभु! आप अन्यजीवों के मोक्षदाता नहीं है फिर भी आपकी सेवा से भक्त भगवान हो जाता है। यद्यपि आप किसी को कुछ भी नहीं देते परंतु भक्त फिर भी अक्षय, अजर, अमर आनंद को उपलब्ध हो जाता है।

जैन दर्शन की सर्वोत्तम धारणा है कि वहाँ कर्त्ता और भोक्ता भिन्न नहीं हो। जो जैसा करता है, वह वैसा ही भोगता है। यह नहीं कि इस कर्त्ता और भोक्ता में कोई तीसरी शक्ति बाधक बनती है। आत्मा की स्वतंत्रता जैन दर्शन की अद्‌भुत घटना है। कर्त्ता और भोक्ता अगर भिन्न-भिन्न होता तो स्वतंत्रता आहत हो जाती।

मोक्ष प्राप्ति का प्रयास जीव का स्वयं का हो तो ही वह अक्षय सुख का भोक्ता हो सकता है। क्योंकि प्रभु न किसी को संसार देते हैं, न सिद्धि! वे तो पूर्ण अकर्म है। सिद्ध पद की शर्त यही है कि समस्त कर्मों से मुक्त हो जाना। कर्म करने की प्रेरणा कामना के कारण ही होती है। प्रभु की तो कोई कामना शेष रही ही नहीं। अत: प्रभु परम अकर्त्ता है। समस्त क्रियाओं से वे निवृत्त हैं। फिर भी प्रभु का ध्यान करने वाला स्वयं प्रभु बने बिना नहीं रह सकता।

प्रभु का चिंतन उनकी वीतरागता का ध्यान भक्तों की मानसिक वृत्तियों का रूपान्तरण कर देती है। यद्यपि प्रभु कुछ भी नहीं करते परंतु यह परमात्मा का अतिशय है कि उनका सान्निध्य चित्त की मलीनता को दूर कर ही देता है। वृत्तियों का परिमार्जन हो जाता है। प्रभु की आराधना निश्चित ही हमारे अन्तस्तल में ऐसी शक्ति, ऐसी आस्था का जागरण कर देती है कि स्वत: हम सिद्धत्व की दिशा में कदम उठा देते हैं।

आवश्यकता है परमात्मा के प्रति असीम श्रद्धा और अपनत्व का भाव जगाये। जिस प्रकार से इल्ली भँवरें का सानिध्य पाकर भ्रमरी में रूपांतरित होती है, वैसे ही प्रभु के ध्यान से जीव शिव बन जाता है। अगर परमात्मा दु:ख और सुख देने में स्वतंत्र होते तो निश्चित ही संपूर्ण सृष्टि को सुखमय बना देते। परंतु सुख और दुख, संसार और सिद्धि जीव के अपने परिणाम है। अगर सिद्धि पानी है और वह इसलिये प्रभु की शरण हृदय से स्वीकार हो जाय तो पशुता समाप्त हुए बिना रहती ही नहीं।

श्रेणिक मिथ्या धारणाओं से भ्रमित था। उसने अपनी

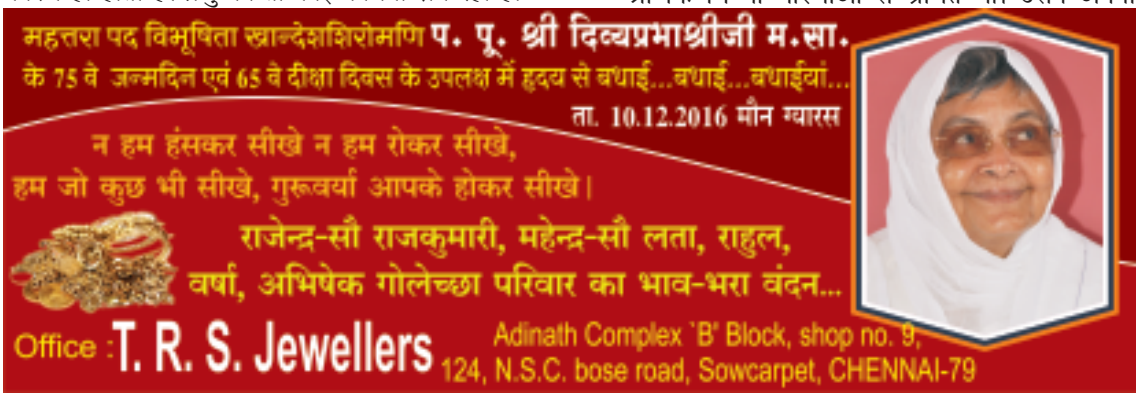

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन

के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...

ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

सूरज की एक किरण अंधकार मिटा देती है,
बसंत की बहार मुरझाया फूल खिला देती है।
गुरू कृपा में बहुत शक्ति होती है
गुरू की नजर सोये भाग्य को जगा देती है।।

वंदन- कर्ता

श्रीमति चंद्रादेवी, पुखराज-सौ किरणदेवी,
मन्नुकुमार-सौ राजकुमारी, गौतमंचद-सौ सीमा, रमेशकुमार, दिलीप कुमार,
भूपेश-सौ भगवती, राजेश-सौ निधि, महिपाल-सौ आशा, शांतिलाल-सौ बीनू, एवं
प्रणव भंसाली परिवार (मरूधर में लोहावट) हाल-चैन्नई

फर्म

श्री गुरूदेव ज्वेलर्स

नाथेला-कॉम्पलेक्ष, दूसरा माला, चैन्नई - 600079
फोन. 94444 02677

उसी भूमिका पर नरक का बंध कर डाला और जब प्रभु ने उसे उसका भविष्य दिखाया तो उसके प्राण उचट गये। उसने कहा-अगर प्रभु आप मेरे प्रारब्ध को नहीं टाल सकते तो आप सर्वशक्तिमान् कहाँ हुए?प्रभु ने कहा- हर आत्मा स्वयं ही अपनी प्रभु है। अपने अर्जित शुभाशुभ को वह स्वयं ही भोगती है। अपने भाग्य का निर्माण वह स्वयं ही करती है। यही शाश्वत विधान है। परन्तु तूं चिन्ता मत कर। अन्त में तेरी स्थिति समान है। आने वाले जन्म में तुम भी तीर्थंकर पद को धारण करोगे।

मनुष्य की धारणा तन्मयता के उत्कृष्ट बिंदु पर जब पहुँचती है, तब वह वही बन जाता है जिसका वह ध्यान करता है। चिंतन की प्रबलता, धारणा की प्रबलता प्राणी को उस जन्म में ही वह बना देती है जिसका वह बार-बार ध्यान करता है। प्रभु के बिना बनाये भक्त प्रभु का ध्यान करके प्रभु बन जाता है। और बिना प्रभु के दान दिये ही मुक्ति दान पाकर भक्त भगवान् को दाता कहकर संबोधित करता है।

जिनवर पूजा रे ते निज पूजना रे,प्रगटे अन्वय शक्ति।
परमानंद विलासी अनुभवे रे,देवचन्द्र पद व्यक्ति ॥७॥

जिनेश्वर परमात्मा की पूजा वह स्वयं की पूजा है। जैसे-जैसे वह प्रभु के ध्यान में तल्लीन बनता है, वैसे-वैसे उसमें सहज स्वाभाविक आत्मशक्ति प्रकट हो जाती है। आत्मा परम आनंद में रमण करने लग जाता है। ऐसा श्रीमद् देवचन्द्रजी का अपना आत्म स्वर है।

श्रीमद्जी यहाँ आत्मा और परमात्मा की भिन्नता को अभिन्न बता रहे हैं। हम अपनी पहचान को टिकाने के लिये भिन्नता स्थापित करते हैं जबकि आगमों में 'एगे आया' का सूत्र मिलता है। इसका अर्थ है- आत्मा एक है। हम नजर घुमाकर देखें तो पता चलेगा कि अनंत आत्मा विद्यमान होने पर भी एक आत्मा का नारा सत्य कैसे है?

इस वाक्य का भाव अत्यंत गहरा है। इस एक वाक्य के द्वारा जिनेश्वर परमात्मा ने स्वयं को समस्त आत्माओं से जोड दिया है। चाहे वह एकेन्द्रिय हो अथवा पंचेन्द्रिय! अगर हम अपना परिचय नाम से देते हैं तो अन्य संपूर्ण सृष्टि से स्वयं विभक्त कर देते हैं। अगर अपना परिचय मानव के रूप में दें तो हम स्वयं को नारक, तिर्यंच व देव जाति से अलग कर देंगे। अगर हम यह कहते हैं कि मैं आत्मा हूँ तो उसका संबंध सारी सृष्टि से जुड जायेगा।

आत्मा एक है, यह सूत्र इसी संदर्भ में है। अगर यह वाक्य हृदय की गहराई में उतर जाय तो व्यक्ति की क्रूरता समाप्त हो जाती है क्योंकि जब उसने स्वीकार कर लिया कि वह और मैं एक ही हूँ तो स्वयं को दु:खी कैसे कर पायेगा! भिन्नता से दु:ख दिया जा सकता है परंतु अभिन्नता में दु:खी करना संभव नहीं है।

यहाँ श्रीमद्जी ने आत्मा और परमात्मा के भेद को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। परमात्मा की पूजा अपनी पूजा है... अपनी आत्मा की पूजा है। प्रभु की पूजा के पीछे हमारा अपना स्वार्थ है। हम पूजा इसलिये करते हैं कि हमारी प्रभुता प्रकट हो। हमारे आत्म-गुणों का विकास हो। हमारी खण्डों में बँटी चेतना अखण्ड बने। जब तक चेतना खण्डों में बँटी रहती है तब तक आनंद की रस धारा उसमें बह नहीं सकती। परंतु ज्योंहि चेतना अखण्ड बनी कि आत्म-शक्ति जाग जाती है।

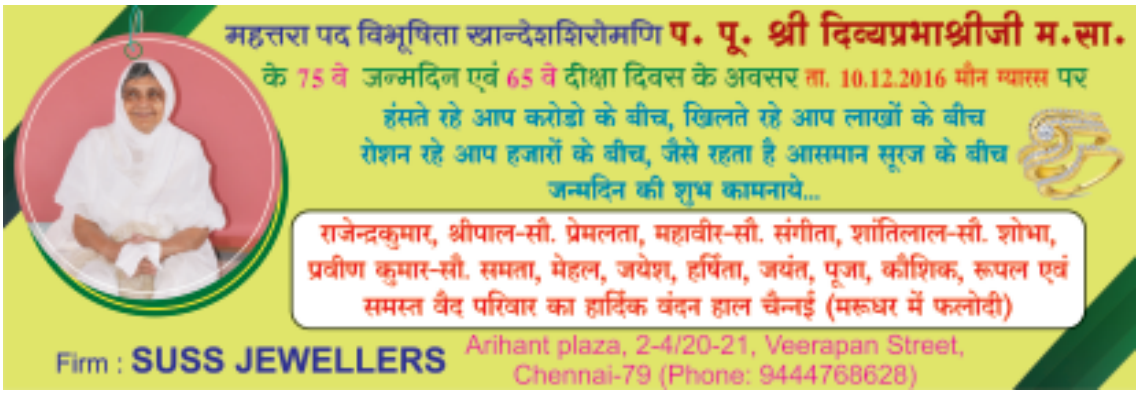

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन

के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...

ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

गुरू की तपोशक्ति से मिलती सर्व सिद्धि है,गुरू के इंगित पर चलना शिष्य की विधि है।
कोई माने या न माने, सुनिये मेरे दिल की आवाज, गुरू का पावन वात्सल्य ही जीवन की नूतन निधि है।।

श्री चरणों मे वंदनावलि

पुखराज-सौ. किरण देवी, राजेश-सौ. निधि, महिपाल-सौ. आशा
दिव्यांश एवं दिविशा भंसाली परिवार

फर्म

Pukraj Rajesh Mahipal Bhansali

33/34, Soliamman koil Street
2nd floor- flat no. 9
Purasawalkam
CHENNAI- 600007

जन्म दिवस पर अभिनन्दन

10 दिसम्बर 2016 को हीरक जन्म दिवस पर विशेष

आत्मीयता के आईने में अपनत्व का अहसास

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

मेरी स्मृति में वह दिन तरंगित हो रहा है जिसे अतीत का हिस्सा बने कोई ज्यादा समय व्यतीत नहीं हुआ है। इसी वर्ष के मार्च का महीना, जब पालीताणा में खरतरगच्छीय साधु–साध्वी का महासम्मेलन आयोजित था। सम्मेलन के दूसरे दिन ही गुरूदेव श्री ने अपने श्रीमुख से परम विदुषी स्नेह की प्रतिमूर्ति साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्री जी म.सा. को महत्तरा पद से विभूषित करने की घोषणा की।

यद्यपि दिव्यप्रभा श्री जी म.सा. सदा से पद और नाम के व्यामोह से दूर ही नहीं अपितु बहुत दूर रहे है। पदाभिषेक की बात इससे पहले भी जब की गई थी, तब भी उन्होंने अत्यन्त कोमलता परन्तु सुदृढ़ता एवं निस्पृहता पूर्वक अस्वीकार कर दिया था।

एक बार मेरा उनसे पद के संदर्भ में वार्तालाप चला तो उन्होंने साफ–साफ भाव्दों में इंकार करते हुए कह दिया–मनितजी! मेरा तो यह स्पष्ट कथन है कि मुझे पद–वद की कोई जरूरत नहीं है। फिर भी यदि लेना पड़ा तो मैं उसी दिन पद को स्वीकार करूँगी जिस दिन गुरूदेव श्री आचार्य पद से अभिशिक्त होंगे।

आदरणीया दिव्यप्रभाश्रीजी म. की आँखों से अनवरत–अनराधार अश्रु के बिन्दु लुढकते हुए गालों को गीला कर रहे थे। मेरी दृष्टि उनके गौरवर्णीय कान्तिमान मुख मण्डल पर थी। मैं उन आँसुओं को क्या नाम देता? श्रद्धा का पैगाम या पद के प्रति निस्पृहता। गुरूदेव के प्रति आस्था का समर्पण या जिनशासन का सम्मान। इंकार करते हुए भी उन्हें अन्ततोगत्वा 11 मार्च 2016 को पूज्यश्री के कर–कमलों से महत्तरा पद पर आरूढ़ होना पड़ा।

मैंने महत्तरा को जहॉ तक देखा है, वहाँ तक जाना है कि वे अतीव निस्पृह और निर्मोही हैं। उन्हें किसी से कोई लेना देना नहीं। उनकी स्पष्टवादिता मुझे बहुत पसंद है।

बडे बडे नामी साधुओं की बात छोडो, छोटे छोटे साधु–साध्वी के भी आज कोई न कोई प्रोजेक्ट चल रहे हैं। ऐसे वातावरण में वे इन सबसे पूरी तरह निर्लिप्त हैं। उनके न कोई प्रोजेक्ट है, न प्रतिष्ठा है, न बडे बडे कार्यक्रम है।

और ऐसा भी नहीं है कि उनके पास प्रतिभा की कमी है, भक्तजनों की अल्पता है, या फिर ऐसी विनंतियाँ नही हैं। इन सब बातों से वे अलग है। फिर भी सब कुछ है उनके पास।

उनके पास है ज्ञान की महान् साधना और आराधना।

उनके पास है जप और तप की दिव्य आभा और प्रभा।

उनके आस–पास है मौन और स्वाध्याय की भीनी भीनी मनभावन महक।

इसी सादगी ने मुझे उनके प्रति आकृष्ट ही नहीं किया अपितु गहराई से मेरे हृदय को भी झंकृत किया है।

उनके सरस्वती समरूप–स्वरूप अणगार जीवन का संदेश प्रकृति ने जन्म के साथ ही मौन पूर्वक प्रसारित कर दिया था।

मौन एकादशी का पावन पर्व जन जन की श्रद्धा का

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि
प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन
के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
प. पू. श्री कविन्द्रसागर जी म.सा.
खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
गुरू को विविध रूपों में
जानना चाहिए...
जब वे व्यवहार सम्बन्धी बातें करे,
तो विष्णु रूप जानें
ज्ञान उत्पन्न करवाये
तब उन्हे ब्रह्मा समझे और गल्ती
पर सारणा, वारणा, चोयणा तथा
पडिचोयणा करें
तब उन्हे शिवरूप जानें...
पावन प्रेरणा
प.पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा.,
प.पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.,
प.पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा.
वंदनकर्त्ता
श्री महावीरस्वामी जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं
चातुर्मास व्यवस्था समिति 2016 फीलखाना हैद्राबाद
की ओर से भाव-भरी वंदना...वंदना...वंदना

केन्द्र है। जिस तिथि का अनंत आत्माओं के कल्याणकों का स्पर्श किया है, उसका तिथि को जन्म लेना क्या उनके महान् आत्मा होने का संदेश नहीं देता है!

लोहावट की भूमि संतों–मुनियों के भरपूर आगमन से पवित्र बनी भूमि है। जहाँ के कण कण संयम की सुवास छायी हुई है। आप विदुषी साध्वी श्री पवित्रश्रीजी म.सा. के संपर्क में आये। भाग्य भूमि में अदृश्य रूप से पडे वैराग और त्याग के बीज उनकी संयमोपदेश की बरखा से प्रस्फुटित होने लगे। तप का ताप भी गिरा और मर्यादा की नाकाबंदी पलते....खिलते... महकते फूलों का संरक्षण करती रही और वह दिन भी आ गया जब आठ वर्ष की नन्ही मुन्नी साध्वी के रूप में परिवर्तित हो गयी। वह दिन भी मौन एकादशी का ही था। दो महान् तिथियों का स्पर्श करना भाग्योदय एवं जीवनोदय का प्रतीक है।

आज लघु सिद्धांत कौमुदी का अध्ययन करने में भले–भलों को पसीना आ जाता है वही आपने अपनी तीव्र प्रतिभा, अलौकिक क्षमता एवं अपूर्व प्रज्ञा के माध्यम से अल्पावधि में ही लघु सिद्धांत कौमुदी का अध्ययन किये बिना ही सीधी सिद्धांत कौमुदी का अध्ययन कर लिया था।

उनकी अपने गुरूजनों के प्रति अतुल और अमिट आस्था है। पूज्य बापजी महाराज गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा., दीक्षा प्रदाता कवि सम्राट्जी आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसूरीश्वरजी म. सा. और वर्तमान खरतरगच्छाधिपति पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति वे अतीव आस्था से परिपूर्ण है। उनके उपकारों की स्मृतियों एवं संस्मरणों को जब कभी वे शब्दों में रूपायमान करते हैं तब उनकी जीभ ही नहीं अपितु रोम–रोम भी श्रद्धा से छलक उठता है। आँखों में श्रद्धा के आँसु उभर आते है। निश्चित ही गुरूजनों के प्रति अपूर्व आस्था कम उपकृतों में ही देखने को मिलती है।

आपकी पचासवीं दीक्षा जयंती के अवसर पर पूज्यश्री द्वारा कहे गये शब्द आज भी मुझे याद हैं। पूज्यश्री ने कहा था– खरतरगच्छ में तो क्या, पूरे जिनशासन में संस्कृत और प्राकृत में खानदेश शिरोमणि महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. एक विशेष स्थान रखते हैं।

आपके चेहरे की तेजस्विता...शब्दों की मधुरता....मन की पवित्रता....हृदय की निश्छलता...जीवन में अप्रमत्तता..! सब कुछ अद्वितीय है। अपूर्व है। अनूठा है।

उनका नाम ही दिव्य नहीं है। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व भी उतना ही दिव्य है। मनभावन हैं। तपते में सावन है।

निश्चित रूप से उनके इस दिव्य, भव्य एवं नव्य व्यक्तित्व से शासन की शोभा में अभिवृद्धि हुई है। उनके संतत्व जीवन के प्रभाव से अनेक जीवन बदले हैं। सच्चाई की राह पर चले है। उनके अलौकिक एवं सुरभिमय आभामंडल से शासन की वाटिका में महक छाई है।

यह अवसर न केवल हीरक जन्म दिवस पर बधाई देने का है, बल्कि उनके जीवन से कुछ सीख लेने का है।

यह अवसर मात्र गुणानुवाद करने का नहीं है, उन गुणों को हृदय में उतारने का है।

यह अवसर मात्र लेख लिखने का नहीं है, उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने भविष्य का उज्ज्वल लेख लिखने का है।

उनको 75वें जन्म–दिवस पर एवं 65वें दीक्षा दिवस उन्हें हृदय की अनंत बधाईयॉ, शुभकामनाएँ, मंगल भावनाएँ प्रेषित करता हूँ।

अरिहंत परमात्मा मेरी श्रद्धा के आलय में बिराजमान गणधर गौतम स्वामी एवं दादा गुरूदेव से प्रार्थना है कि वे वर्षों तक इसी प्रकार शासन की, गच्छ की सेवा करते रहे। आने वाला वर्ष स्वस्थता से भरा हो। निराकुल और निरामय हो। खुशियों की खूशबू से महका महका हो।

शताब्दी पर्यन्त उनकी आत्मीयता मिलती रहे। उनका निश्छल स्नेह सदा स्मृति पटल पर तैरता रहे। यही मेरे मन का संदेश और मेरे अंतर के उद्गार हैं।

खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन

के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...

ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

शांत मूर्ति
श्री पवित्रश्रीजी म.सा.

चेतना की चमकती चांदनी का अभिनंदन,

साधना की दकमती रोशनी का अभिनंदन।

अपनी अमृत वाणी से हम सब को सदा सुमार्ग दिखाने वाले।

गुरुवर्या के जन्म दिवस पर हम सबका शत-शत वंदन।।

वंदनकर्त्ता

शांतिनाथजी भगवान
जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट

204 टी.एच.रोड़, पुरानी धोबीपेट
चैन्नई - 600 021
फोन : 044-25904661

मौन एकादशी जन्म के 75वें वर्ष प्रवेश एवं दीक्षा के 65वें वर्ष प्रवेश पर विशेष

पू. गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. : एक आराध्य व्यक्तित्व

साध्वी विरागज्योतिश्री विश्वज्योतिश्री, हैदराबाद

पूजनीया गुरुवर्या खान्देश शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. के जन्म दिवस एवं दीक्षा दिवस पर मैं हृदय से उनका अभिनंदन करती हूँ।

पूजनीया गुरुवर्याश्री ने जन्म लिया वि. सं. 1999 मौन एकादशी को! जिस तिथि को 150 कल्याणक हुए हों... जो तिथि आराधना का आधार बनी हो... उस तिथि को जन्म लेना ही अपने आप में महान् पुण्य की निशानी है। कोई विशेष संकेत देती है यह घटना!

पूजनीया गुरुवर्याश्री का जन्म भी उसी दिन और संयोग से दीक्षा का शुभ मुहूर्त भी उसी दिन निकला! इस तिथि के पावन स्पर्श ने पूजनीया गुरुवर्या को संयम... त्याग... और साधना के दिव्य पथ पर अग्रसर कर दिया।

लोहावट की वह पावन भूमि, जो भूमि रत्नों की खान कहलाती है... जहाँ से कितनी ही आत्माओं ने संयम मार्ग ग्रहण करके अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए जन्मभूमि को सम्मान के शिखर तक पहुँचाया है, उस लोहावट की भूमि पर आपका जन्म हुआ।

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि द्वारा प्रतिबोधित भंसाली कुल में आपका अवतरण हुआ।

भंसाली कुल के श्री मेघराजजी की धर्मपत्नी अखण्ड सौभाग्यवती मूली देवी की रत्नकुक्षि से आपने जन्म लेकर कुल के आंगन को रोशन किया। नाम रखा गया चन्द्रा! आपकी आवाज में जो माधुर्य था... आपश्री के कण्ठ में जैसे कोयल की आवाज ने स्थिरवास कर लिया था, आपकी इस मीठी आवाज के कारण परिवार वाले सभी आपको 'सुआ' कहकर पुकारते थे।

छोटी उम्र में ही आपश्री का मन घर में न लग कर पूजनीया प्रशांतमूर्ति श्री पवित्रश्रीजी म.सा. के पास उपाश्रय में लगने लगा।

पूजनीया श्री पवित्र श्रीजी म. लोहावट बिराज रहे थे। उन्होंने इनमें और इन्होंने उनमें जो आकर्षण देखा... जो पूर्व जन्मों का संबंध देखा, परिणाम स्वरूप आपश्री उपाश्रय में ही रहने लगे।

खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं
65 वे दीक्षादिन के अवसर पर
तहेदिल से बधाईयां...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

गुरूवर्या आप जिनशासन की शान है,
आप में भरा हुआ ठोस ज्ञान है।
ठीक बात कहते हैं सब लोग,
हमारे हृदय के आप ही भगवान है।।

वंदनाभिलाषी

चंद्रशेखर सराफ, डॉ पुखराज भंसाली, रमेश निमाणी,
विनोद मेहता, राजेश रांका, संजय रांका, प्रशांत श्रीमाल
समस्त ट्रस्ट मंडल

श्री कांति मणि विहार
श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं
दादावाडी ट्रस्ट

नंदन कार्निवाल के सामने, मुंबई आगरा रोड़
आडगांव- 422108 नाशिक (महाराष्ट्र)
मो. 7722081120

पूजनीया गुरु की गोद में सिर रख कर तारने की जैसे प्रार्थना करने लगे।

थोडे बडे हुए! बुद्धि वैभव का दर्शन करके गुरु मण्डली चकित हो उठी। मात्र 48 मिनट में वंदित्तु सूत्र याद कर लिया!

एक घंटे में संस्कृत भाषा की रत्नाकर पच्चीसी याद कर ली!

आपकी इस बुद्धि प्रतिभा को देख कर पूरा संघ हर्ष विभोर हो उठा।

जब आपश्री छह वर्ष के हुए, तब तक तो आपश्री ने पंच प्रतिक्रमण, सप्त स्मरण, भक्तामर आदि कई स्तोत्र कण्ठस्थ कर लिये थे!

गुरु भगवंतों के सानिध्य का असर दिखाई देने लगा!

पूर्व जन्म की साधना को जैसे स्वर मिले!

और संयम ग्रहण के भाव आपकी भाषा द्वारा अभिव्यक्त होने लगे! उम्र का आंकडा दश तक भी नहीं पहुँचा था कि सुआ ने घर में अपने परिवार को एकत्र कर उनके सामने दीक्षा ग्रहण करने के लिये अनुमति की याचना की। सुनकर दादा, दादी, पिता पूरा परिवार अचरज से भर उठा। दादाजी जीतमलजी ने कहा– अभी इस छोटी उम्र में दीक्षा कैसे दी जा सकती है?

दादाजी को लगा– यह बिटिया इतनी नाजुक है! सुकोमल है! संयम का पालन कैसे करेगी!

पर सुआ बहुत दृढ़ थी। उसने अपने जीवन का लक्ष्य चुन लिया था। उसके स्वरों में उसकी विनयभरी दृढता बोलने लगी।

आखिर दादा दादी माता पिता सभी को झुकना पड़ा। दीक्षा की अनुमति प्राप्त कर नन्हीं मुन्नी सुआ हर्ष विभोर हो उठा।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री कवीन्द्रसागरजी म.सा. से परिवार वालों ने विनंती कर दीक्षा मुहूर्त्त प्रदान करने एवं दीक्षा करवाने की भावभरी विनंती की।

पूज्य उपाध्यायश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर पंचांग देख कर मिगसर सुदि एकादशी का दिन घोषित किया। सुनकर सभी अचरज से भर उठे। इसी दिन तो इसका जन्म हुआ था.. और दीक्षा भी इसी दिन! क्या अद्‌भुत योग है! दीक्षा भी तो एक तरह से पुनर्जन्म ही है। जन्म और पुनर्जन्म दोनों की तिथि एक!

नन्हीं मुन्नी सुआ... चन्द्रा जिसे मिला मां का प्यार! पिता का वात्सल्य! दादा और दादी की दुलार! गुरुणीजी से मिला संयम का आधार! जिसे मां ने अपने धर्ममय संस्कारों से सींचा! मां की प्रारंभ से ही यह भावना कि मेरी बेटी दीक्षा लें। यदि इसका भाव होता है, तो मैं बाधक नहीं बनूंगी! बल्कि मैं स्वयं भी योग आने पर दीक्षा लूंगी। मुझे भी तो अपनी आत्मा का कल्याण करना है।

दीक्षा का भव्य वरघोडा निकाला गया। सभी लोग

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि
प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिवस
के अनुपम अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
बज रहे है ढ़ोल,
गूँज उठी शहनाई।
गुरूवर्या के जन्म-दीक्षा दिवस पर,
खुशियां ही खुशियां छाई।।
वंदनाभिलाषी
In sweet memory of Late Mathura Bai Rajmalji Parekh
son-grand sond-great grandson : Mahaveerchand-Gunvanti
Nilesh-Nirmala, Poonam-Varsha, Rishab, Sanjana, Sheetal,
Suman & Vidhi Parekh, Kiran, Vimal & Vinay Lodha, Lohawat-Chennai
Firm : Mahaveer t-shirts
महावीरजी पारख चैन्नई
MAHAVEER CHAND PAREKH
President Shree Lohawat Pravashi Jain Sangh Chennai
Vice-President Shri Jinduttsuri Jain Mandal (Dharamnath Mandir)
Executive committee member Shree Jain Sikhan Sangh, Chennai
Member Shree G.K. Jain Hr. Sec. School Chennai
'' वीर गुण'' Land Line : 044 - 43371333
77, Venkatachalam Mudali Street, Royapuram, CHENNAI - 600013
Mobile : 919444285450, Tel. : 91+44-25468246
Email: Mahaveerparekh@cloud.com

इस नन्हीं परी को देखते ही रह जाते। नन्हीं सुआ, रूप सौन्दर्य में परी से कम न थी। उसकी दृढ़ता वज्रकुमार की स्मृति दिलाती थी।

पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री कवीन्द्रसागरजी म.सा. ने अपने करकमलों से वि. सं. 2009 मिगसर सुदि एकादशी को दीक्षा प्रदान की... रजोहरण अर्पण किया... कुमारी सुआ नाच उठी! उसकी खुशियाँ तरंगित हो उठी।

पूज्य उपाध्यायश्री ने इनका नया नाम दिया– साध्वी दिव्यप्रभाश्री!

यह नाम लोगों की जुबां पर चढ गया। गुरुवर्याश्री ने दीक्षा लेते ही अपने मन को अध्ययन के प्रति संपूर्ण रूप से एकाग्र कर लिया। एक साल के अन्दर अन्दर सिद्धान्त कौमुदी व्याकरण पूरा कर लिया। आगमों के अध्ययन के प्रति पूज्याश्री की सजगता ने उन्हें आगम ज्ञाता बना दिया। आपश्री संस्कृत, प्राकृत भाषा की परम विदुषी है।

अपनी गुरुवर्याश्री के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित हो उनकी सेवा वैयावच्च में निमग्न हो गई। पूज्याश्री ने खान्देश में कितने ही चातुर्मास किये! खान्देश के श्रावक श्राविकाओं में धर्म के बीजारोपण में आपका पूर्ण योगदान रहा। इस उपकार का स्मरण खान्देश वासी निरन्तर करते हैं।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में जब खापर नगर में दादावाडी की प्रतिष्ठा होने जा रही थी, उस अवसर पर सकल श्री संघ के निवेदन पर पूज्यश्री ने गुरुवर्याश्री को 'खान्देश शिरोमणि' पद से विभूषित किया।

अभी पालीताना में हुए खरतरगच्छ महासम्मेलन में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने पूजनीया गुरुवर्याश्री को महत्तरा पद से विभूषित किया।

गुरुवर्याश्री का मन किसी भी प्रकार के पद ग्रहण का नहीं होने पर भी गुरुदेवश्री के आदेश को शिरोधार्य करना पडा।

गुरुवर्याश्री को पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है। उनकी आराधना साधना वे निरन्तर करती है। कई बार उनसे प्राप्त संकेत प्राप्त किये हैं।

गुरुवर्याश्री के हृदय में अपने दीक्षा दाता गुरुदेव उपाध्यायश्री कवीन्द्रसागरजी म.सा. के प्रति अपार श्रद्धा है। पूज्य गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. के प्रति.. उनकी परम्परा के प्रति पूर्ण समर्पण भाव आपके हर निर्णय में प्रकट होता है। वर्तमान गच्छाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के प्रति प्रेम, वात्सल्य, श्रद्धा, समर्पण के भाव पूर्ण रूप से भरे हैं।

उनकी स्मृति की सूक्ष्मता... बुद्धि की तीव्रता... श्रद्धा की अगाधता... सभी को प्रेरणा देती है। स्पष्टवादिता आपश्री का मुख्य गुण है।

10 दिसम्बर 2016 को पूजनीया गुरुवर्या श्री अपने जीवन के 74 वर्ष एवं संयम ग्रहण के 64 वर्ष पूर्ण कर 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे भी उसी कुल में जन्म लेने का और उनके श्रीचरणों में संयम जीवन अंगीकार करने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ। संसार पक्ष से वे मेरी भुआ है। उनके श्रीचरणों में अपनी हार्दिक वंदनाऐं समर्पित करती हूँ। उनके सुदीर्घ स्वस्थ जीवन की गुरुदेव से कामना प्रार्थना करती हूँ।

गुरु महिमा है जग में बडी।
गुरु बैठे हैं अन्तर में।
जैसे सूरज हो अंबर में।
जैसे मोती समंदर में।।

गुरू गुण गीतिका

तर्ज : उड़े जब-जब जुल्फे...

जन्म दीक्षा तिथि है आई कर जोड के देते बधाई
कि खुशी छाई जन-जन में... गुरुवरजी।।टेर।।

लोहावट नगरी पावन, मेरे गुरुवर्या मन भावन
कि छवि बसी हर मन में...गुरुवरजी।।1।।

गुरु कवीन्द्र का आशीष पाया,
गुरु पवित्र का नाम दीपाया
कि फूल खिला शासन में...गुरुवरजी।।2।।

गुरु आगम के हैं ज्ञाता, जो आता वो तत्व को पाता
कि पल बीते चिंतन में...गुरुवरजी।।3।।

गुरु जीयो हजारों साल, गुरुवर्या है बेमिशाल
कि गुरु बसे धड़कन में...गुरुवरजी।।4।।

लेखन– दिव्यप्रभा मण्डल

म्हारा गुरणीसा हो राज

लोहावट में जन्म लियो, पिता मेघराज
माता आपरी मूलीबाई, पवित्रश्री सा गुरुराज
म्हारा गुरणीसा हो राज, म्हारा मरासा हो राज
जुग जुग जीओ आप, हीरक जयन्ति आज...
दीक्षा दिन भी आज ।।टेर।।

मिगसर सुदी एकादशी, खुशियों की बहार।
जन्म दिन दीक्षा दिन की बधाई बारम्बार, म्हारा. ।।1।।

बचपन में संयम लीनो, कवीन्द्रसूरि के हाथ ।।
ज्ञानगंगा में डूबकी लगाई,
सदा सिर पे गुरु हाथ, म्हारा. ।।2।।

मणिप्रभसूरिजी ने ली, साधु-साध्वी की राय।
'महत्तरा' पदवी दीनी, सकल संघ के मांय, म्हारा. ।।3।।

चैत वदी आठम को, जन्म-दीक्षा आदिनाथ।
मिगसर सुदी इग्यारस को,
महत्तराजी का जन्म दीक्षा साथ, म्हारा. ।।4।।

पालीताणा की पावन पृथ्वी पे, अभिवन्दन है आज।
विशाल बधाई का नाद गूंजे, बजे स्नेह स्वर के साज, म्हारा. ।।5।।

साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, साहित्यरत्न

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के अवसर पर खूब-खूब बधाईयां ...
वंदन...अभिनंदन...

चाहे बसो पहाड़ पर या फूलों के गांव।
गुरुवर के आंचल से अधिक, शीतल कहीं न छांव ।।

हंसराज, महावीरचंद, राहुल, विनय, नीतिन, वियान
समस्त गोलेच्छा परिवार हाल चैन्नई (मरूधर में लोहावट)

जन्म-दीक्षा दिन की बधई

बधाई बधाई बधाई रे,
जन्म-दीक्षा दिन की बधाई ।।टेर।।

मिगसर सुद इग्यारस आई खुशियों का खजाना लाई।
जय-जय की धुन मचाई रे, जन्म... ।।1।।

उन्नीस सौ नवाणुं वर्ष, लोहावट में छाया हर्ष।
जन्म की बांटे घर-घर मिठाई रे, जन्म... ।।2।।

विक्रम संवत् दो हजार नव, दिव्यप्रभा नाम अभिनव।
संयम की बजी शहनाई रे, जन्म... ।।3।।

जीवन में लिया गुरु का साथ, सदा सिर पे गुरु का हाथ।
ज्ञान ध्यान की ज्योति जगाई रे, जन्म... ।।4।।

मयंक-मेहुलजी आदि गुरुराज, साधु-साध्वीजी निश्रा आज।
धन्य घड़ी धन्य वेला आई रे, जन्म... ।।5।।

हीरक जयन्ति प्रसंगे, पालीताणा में महोत्सव उमंगे।
जन-जन में हरख न माई रे, जन्म... ।।6।।

संयम जीवन की अनुमोदना, स्वीकारो विशाल की वन्दना।
सब मिल देते शुभ बधाई रे, जन्म... ।।7।।

साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, साहित्य रत्न

महत्तरा पद विभूषिता स्वान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के मंगल अवसर पर श्रद्धायुक्त बधाईयां...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

गुरू को शिर पर रखियो चलियो आज्ञामांहि,
कहे कबीर उस दास को तीन लोक डर नांहि।।

शत-शत वंदन
आसकरण प्रकाशचंद
पारख

Firm :
9/26 Ramanuja koodam street,
old washermenpet,
CHENNAI- 600021, Cell : 98404 40094

महत्तरा पद विभूषिता स्वान्देशशिरोमणि
प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के उपलक्ष में
हृदय की गहराईयों से ढ़ेर सारी बधाईयां ...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
चरण आपके पड़े जहां भी वसुंधरा वो नंदन है,
वचन आपके झरे फूलों से सांसे बनी वो चंदन है।
देव स्वर्ग से करते नित आपका अभिनंदन है,
ऐसे पू. गुरूवर्या के जन्म दिवस पर हम सबका वंदन हैं।।
प.पू. साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी म.सा., प.पू. साध्वी श्री दक्षगुणाश्रीजी म.सा.,
प.पू. साध्वी श्री मयणरेखाश्रीजी म.सा., प.पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा.,
प.पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा., प.पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से
कोटि-कोटि वंदन
श्रीमती चंद्रादेवी-जेठमलजी, भूपेश-सौ. भगवती नयन, प्रशम एवं समस्त भंसाली परिवार हाल चैन्नई (मरूधर लोहावट)
firm : PUSHKAR PHARMA BHUPESH
office : 35/1 Venkier street, 2nd Floor, Kodithope, Cell : 9840257674

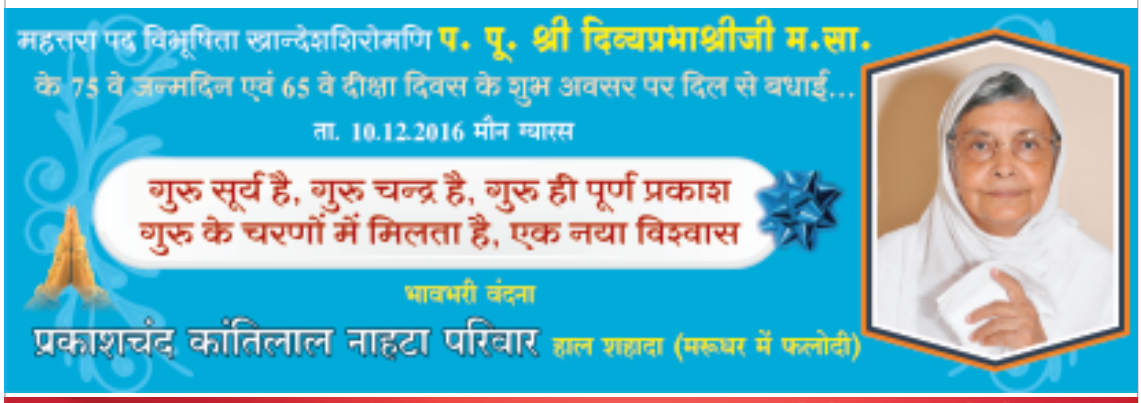
महत्तरा पद विभूषिता स्वान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर दिल से बधाई...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
गुरु सूर्य है, गुरु चन्द्र है, गुरु ही पूर्ण प्रकाश
गुरु के चरणों में मिलता है, एक नया विश्वास
भावभरी वंदना
प्रकाशचंद कांतिलाल नाहटा परिवार हाल शहादा (मरूधर में फलोदी)

महत्तरा पद विभूषिता स्वान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के उपलक्ष पर हृदय की बधाईयाँ
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस
न सुर है न ताल है, न शब्द है न ज्ञान है
क्या लिखूं आपके लिए गुरूवर्या कलम खुद हैरान है
विधिवत वंदन
नवरतन मेघराजजी ललवानी परिवार
अक्कलकुंवा

50 संस्मरण

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

हम सभी बहुत ही उत्सुकता व उल्लास के साथ पूज्यश्री के श्रीमुख से उनके अनुभवों का खजाना लूट रहे थे। वे जितना बांट रहे थे... उससे ज्यादा हम प्राप्त करने की चेष्टा में लगे थे। बीच बीच में हमारे द्वारा हो रहे प्रश्न, पूरक प्रश्न एक तरह से अधिकतम प्राप्त करने के अभियान का हिस्सा था।

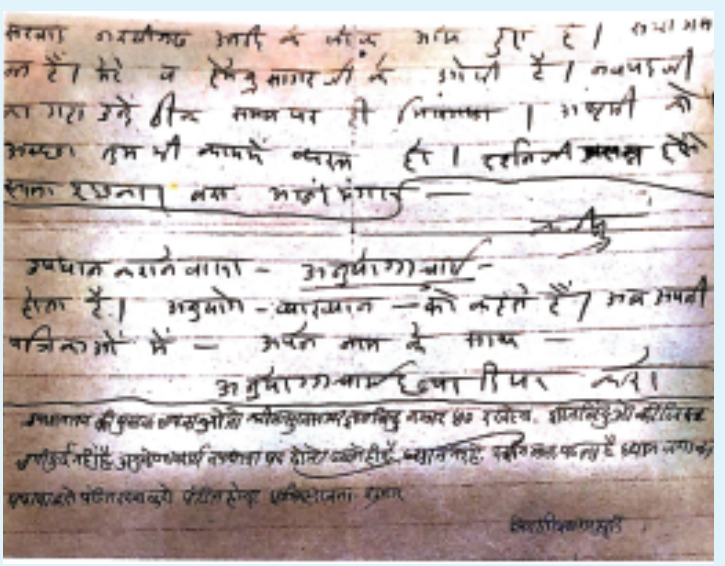

पूज्यश्री खामगांव के संस्मरण सुना रहे थे। संवत्सरी के संबंध में चर्चा होने पर मैंने पूज्यश्री से पूछा था- क्या कोई उपाय है कि संवत्सरी की भिन्नता समाप्त हो जाये?

पूज्यश्री ने कहा था- उपाय है। सबसे पहले तो हमें आराधना के लिये आगमानुसार जैन पंचांग का निर्माण कर लेना चाहिये। पूर्व में आचार्य जिनजयसागरसूरिजी म. ने किया था। यदि आगम के अनुसार पंचांग का निर्माण होता है, जिसमें कोई तिथि बढती नहीं है। और दो महिनों में एक तिथि का क्षय होता है, तो एक तिथि-दो तिथि की सारी समस्याऐं समाप्त हो जाती है। दूसरी बात पंचमी और चतुर्थी की है। तो इसमें तो मूल परम्परा को स्वीकार करना होगा। तभी एकता संभव है।

मैंने वार्ता का रूख संवत्सरी से संस्मरणों की ओर मोडते हुए निवेदन किया- खामगांव चातुर्मास के बारे में बताऐं।

पूज्यश्री ने कहा- बरार एक भावुक क्षेत्र है। लोग सीधे, सरल और धर्म के प्रति आस्था से भरे हैं। अपने अपने संप्रदाय का सामान्य आग्रह तो सबमें रहता ही है। पर अन्य संप्रदायों के प्रति द्वेष भाव उनमें जरा भी नजर नहीं आया था।

संचेती परिवार खरतरगच्छ का परिवार है। उनके हृदय में उपधान तप कराने का भाव उपस्थित हुआ था। मेरे जीवन का यह पहला उपधान था। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म. सा. से उपधान तप की आज्ञा के साथ साथ विधि विधान से संबंधित मार्गदर्शन मिला।

मैंने पूछा- गुरुदेव! मेरे प्रश्न से आप नाराज मत

होना। पर उस समय आपकी दीक्षा पर्याय तो सोलह वर्ष की थी, जबकि फलोदी सम्मेलन की प्रकाशित नियमावली मैंने पढी थी। उसके अनुसार 20 वर्ष का दीक्षा पर्याय उपधान कराने के लिये आवश्यक है। फिर यह कैसे संभव हुआ!

पूज्यश्री ने कहा– तुम्हारा प्रश्न उचित है। इसलिये जब संचेती परिवार की ओर से उपधान तप कराने के लिये विनंती की गई, तब मैंने कहा– उपधान मैं करा सकता हूँ, या नहीं, इसका निर्णय पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री करेंगे। उन्होंने बरार देश की स्थिति, गच्छ में मुनियों के विचरण की स्थिति आदि सारी बातों का विस्तार कर पूज्य आचार्यश्री को पत्र लिखकर उपधान कराने की अनुमति प्रदान करने की विनंती की।

पूज्य आचार्यश्री ने देश काल भाव देखकर विशेष अधिकार का उपयोग करते हुए उपधान कराने की अनुज्ञा प्रदान की। चूंकि मेरी निश्रा में स्वतंत्र रूप से यह पहला उपधान था... पहले देखा जरूर था.. पर कराने का अनुभव न था.. इसलिये पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री एवं पूज्य उपाध्याय श्री कवीन्द्रसागरजी म. ने पूरा विवरण विस्तार से भेजा था। विधि क्या है... क्या कल्पता है... क्या नहीं लेना चाहिये.. वांचना विधि क्या है... कब देनी चाहिये... तप की गणना कैसे की जाती है... इन सबका विस्तृत विवरण उनके कृपा-पत्र से ही प्राप्त हुआ।

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई... बधाई... बधाई...

गुरु के आगे सर झुकाते है, उन्हें वासक्षेप मिलता है,
और हृदय झुकाते हैं, उन्हें.. आशीर्वाद मिलता है..!!
विधिवत् वंदन
तिलोकचंदजी श्रीमति कमलादेवी प्रमोद एवं प्रवीण चोपडा परिवार
Firm : CHOPDA Silver Shop
52.N.S.C. Bose road, CHENNAI (Cell : 8925300000)

क्योंकि उपधान की व्यवस्था बिल्कुल अलग होती है। उसमें एक दिन उपवास तो दूसरे दिन नीवि कराई जाती है।

मैंने पूछा- दूसरे दिन तो एकासणा कराया जाता है।

गुरुदेवश्री ने फरमाया- लगता तो एकासणा है, परन्तु उसे नीवि कहा जाता है। क्योंकि इसमें नीवियाता का प्रयोग होता है।

मेरे लिये उस समय नीवियाता शब्द नया था। मैंने इसका विस्तार से अर्थ जानना चाहा।

पूज्यश्री ने फरमाया- विगइ को शक्ति रहित करके उपयोग करना, नीवियाता कहलाता है। नीवि में घी, दूध आदि विगईयों का उपयोग नहीं होता। परन्तु नीवियाता में उनका उपयोग विशिष्ट प्रयोग पूर्वक होता है।

मैंने बीच में कहा- यह विशिष्ट प्रयोग क्या है?

पूज्यश्री ने कहा- मणि! घी, दूध आदि का उपयोग सीधे सीधे नहीं होता। उस घी को अच्छी तरह से गरम करना होता है अर्थात् जला देना होता है। साथ ही उस घी में तीन बार पूरी आदि तलने के बाद वह घी उपधान में उपयोग आता है। इसी प्रकार दूध भी सीधे सीधे उपयोग में नहीं आ सकता। उस दूध में आटा आदि का छौंका देना होता है, तब वह उपयोग में आता है। यह प्रक्रिया विशिष्ट प्रयोग है।

मैं यह सारी बातें पहली बार सुन रहा था।

मैंने कहा- फिर तो यदि उपधान की इस व्यवस्था का पता न हो तो आराधना के स्थान पर विराधना होने की संभावना रहती है।

पूज्यश्री ने कहा- हाँ! इस तप में अनुभवी पाकशास्त्री का होना बहुत जरूरी है। जिसे गीतार्थ गुरु भगवंतों के सानिध्य में उपधान कराने का अनुभव हो, वही उपधान तप में भोजन विधान को शास्त्रीय प्रणालिका पूर्वक संचालित कर सकता है।

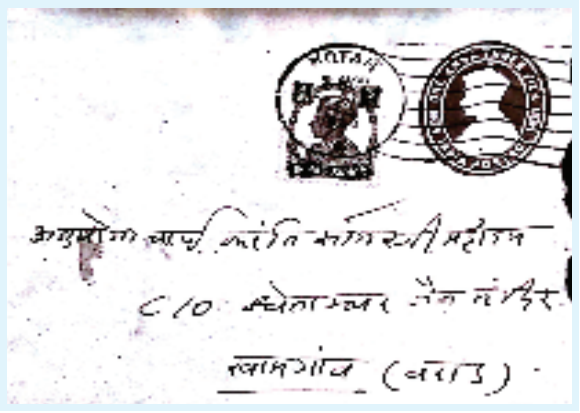

मैंने ये सारी बातें विस्तार से अपनी डायरी में अंकित कर ली।

मैंने चिंतन किया- पूज्यश्री के जीवन का यह वर्ष बहुत महत्वपूर्ण था। क्योंकि इसी वर्ष उपधान तप प्रारंभ के अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री अनुयोगाचार्य पद से विभूषित किये गये। जब उपधान की अनुज्ञा पूज्य आचार्यश्री जिनहरिसागरसूरिजी म. ने गुरुदेवश्री को प्रदान की थी, तो साथ ही पत्र लिखकर अनुयोगाचार्य पद प्रदान करने की घोषणा भी की थी। पत्र में लिखा- उपधान कराने वाला अनुयोगाचार्य होता है। अनुयोग व्याख्यान को कहते हैं।

पूज्य आचार्यश्री जिनहरिसागरसूरिजी म. तथा पूज्य उपाध्यायश्री कवीन्द्रसागरजी म. दोनों ने पत्र लिखकर पूज्यश्री को एवं संघ को आदेश दिया कि अब तुम्हें अपने नाम के पहले अनुयोगाचार्य लिखना है। अनुयोगाचार्य और पंन्यास दोनों पद एक से ही हैं। श्री संघ ने पूज्य आचार्यश्री की आज्ञा का पालन करते हुए जो उपधान माला की पत्रिका प्रकाशित करवाई, उसमें अनुयोगाचार्य पद का उल्लेख किया।

पूज्यश्री की निश्रा में यह पहला उपधान हो रहा था। इस उपधान का आयोजन श्री हनुतमल मोतीलाल संचेती लोणार वाले नामक फर्म के मालिक संघवी श्री उत्तमचंदजी गेन्दुलालजी संचेती परिवार द्वारा किया गया था। उपधान तप की आराधना में 300 से अधिक आराधकों ने साधना की थी। इस उपधान तप का माल महोत्सव मिगसर सुदि 5 ता. 5 दिसम्बर 1948 को संपन्न हुआ था।

क्रमशः

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

श्री दुर्ग नगर से उवसग्गहरं तीर्थ - नगपुरा
एवं कैवल्यधाम तीर्थ - कुम्हारी

छह री पालित संघ

निश्रा एवं सानिध्य

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री मज्जिन कांतिसागर सूरीश्वर जी म.सा. के
प्रधान शिष्य मरुधरमणि परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति

आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., आदि ठाणा-6

एवं पू. प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्रीजी म.सा. की शिष्या श्रमणीरत्ना पूजनीया माताजी म. साध्वी
श्री रतनमाला श्री जी म.सा.
पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युतप्रभा श्री म.सा आदि ठाणा-5

ता. 14.11.16 कार्तिक पूर्णिमा से ता. 18.11.16 तक

संघ प्रस्थान
ता.14.11.16 प्रातः 4.30 बजे
बरड़िया विहार
वर्धमान नगर, दुर्ग

जीवराशि क्षमापना विधान
ता. 15.11.16 प्रातः 9 बजे
सुखसागर वाटिका, दुर्ग

संघपति माला विधान
18.11.16 प्रातः 9 बजे
कैवल्यधाम तीर्थ, कुम्हारी

आप सभी से पधारने का हार्दिक निवेदन हैं।

निवेदक : भूरमल पतासी देवी बरड़िया परिवार, दुर्ग

विनीत : श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, दुर्ग, संघशास्ता चातुर्मास समिति 2016

संपर्क सूत्र :
वैभव चौरड़िया 9691159011, पीयूष नाहटा 9893942911, यश बरड़िया 9584438980 सौरभ बरड़िया 7725076700,
जयेश सुराना 7691955004, हर्ष बरड़िया 7049565512, पूरब बरड़िया 9039924199, संभव बरड़िया 7587034507,
उज्जवल बरड़िया 9098338553, कुमारपाल बरड़िया 7694065512
Email : pbaradiaca@yahoo.co.in

वैयावच्च पर विशेष आलेख

वैयावच्च के महत्व को दर्शाने वाला विशेष आलेख

जीवन का पुष्प... सेवा की सुगंध

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जिनशासन के शब्दकोश में 'वेयावच्च' के नाम से सुप्रसिद्ध सेवा गुण की अपने आप में अप्रतिम विशिष्टता है। इसे वेयावृत्त्य भी कहा जा सकता है।

वेयावच्च शब्द के दो अर्थ किये जा सकते हैं-

१. वेयापृत्य - प्राकृत में इसका 'वेयावडिय' रूपान्तरण होता है जिसका अर्थ होता है-जुट जाना, लग जाना।

२. वेयावच्च - अद्वैत भाव लाना। एक का दूसरे में रूपान्तरित होना अर्थात् सेवाभावी स्वयं को रोगी के रूप में मानता है।

अन्य व्यक्ति के व्याधि, परिषह, प्रतिकूल आदि स्थिति में उसके प्रतिकार स्वरूप जो क्रिया अनुष्ठान या व्यापार होता है, उसे वेयावच्च कहते है।

वेयावच्च के प्रकार-

तत्वार्थ सूत्र आदि में **'आचार्योपाध्याय-तपस्वी-शैक्षक-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-सशैक्षक-मनोज्ञानाम्'** अर्थात् आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शिक्षाशील, रोगी, गण, कुल, संघ, साधु और समान समाचारी वालो की वेयावच्च करने का उपदेश दिया गया है।

सेवाभावी को आचार्य इत्यादि की अन्न, जल, वस्त्र, पात्र, वसति, पीठ फलक, संस्तारक, उपधि-प्रतिलेखना, औषधि-प्रदान, अध्यापन-सहयोग, राजा के विपरीत होने पर समाधान, चोरों से संरक्षण, अशुचि-परिष्ठापन आदि के द्वारा सेवा करनी चाहिए।

वेयावच्च के प्रकार -

शास्त्रों में दो प्रकार की सेवा का निरूपण किया गया हैं-पारमार्थिक सेवा और व्यवहारिक सेवा।

जिस प्रकार से मुधादायी और मुधाजीवी, दोनों दुर्लभ कहे गये हैं, उसी प्रकार पारमार्थिक सेव्य और वेयावच्च तत्पर, दोनों ही इस सृष्टि में दुर्लभ हैं। जिस सेवा के अन्तर्गत स्वार्थ, प्रलोभन, यशोभिमान आदि सांसारिक कामनाओं का जाल नहीं होता, एकमात्र मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा से सेवा की जाती है, वह पारमार्थिक सेवा है और जो सेवा यश, मान-सम्मान, लोभ, स्वार्थ आदि लक्ष्य से की जाती है, वह व्यवहारिक सेवा है।

एक व्यक्ति माँ-बाप की सेवा या गुरू की वेयावच्च इस कारण करता है कि उनके मुझ पर अगणित उपकार हैं, वह पारमार्थिक सेवा है परन्तु यश-मान पाने के लिए अथवा व्यवहारिकता के निर्वहण करने के लिए जो सेवा की जाती है, वह व्यवहारिक सेवा है। हमारी सेवा में स्वार्थ का तुच्छ भाव न हो अपितु परमार्थ का उत्तम प्रभाव हो।

षष्ठम् पुण्यतिथि पर हार्दिक

श्रद्धांजलि

श्रीमती सवितादेवी
शांतिलालजी मेहता

जन्म
03.06.1973

स्वर्गवास
06.12.2010

मेरी प्यारी बेटी

पलकों में पली साँसों में बसी माँ की आस है बेटी
हर पल मुस्काती गाती एक सुखद अहसास है बेटी
गहन अंधेरी रातों में जैसे, भोर की उजली किरण है बेटी
सूने आँगन में खिली, मासूम कली सी मुस्कान है बेटी
मान अभिमान है बेटी, दोनों कुलों की लाज है बेटी
दुख दर्द अंदर ही सहती, एक खामोश आवाज है बेटी
तपित धरती पर सघन छाया सी, शीतल हवा है बेटी
लक्ष्मी दुर्गा सरस्वती सी, बुजुर्गों की पावन दुआ है बेटी
तुम्हारे दूर जाने पर, क्या कैसे बीतें दिन-रात ?
उदास मन सूना आँगन, फिर बहुत याद आती है बेटी
रखी हुई है तस्वीर यहीं मेज पर प्रतिपल मुझे चिढ़ाती है,
और तुम्हारी सांचोर वाली फोटो हमें खूब रुलाती है।

तुम्हारी माँ

प.पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की आप सांसारिक बहिन थी।

शा. कालुचंदजी अशोककुमार श्रीश्रीश्रीमाल
फर्म
मणि स्टील इण्डस्ट्रीज
मुम्बई
फोन : 022-67437943

शा. शांतिलालजी मेहता
रोहित कुमार रीतिक कुमार मेहता
फर्म
रोहित एल्युमिनियम एजेन्सी
अहमदाबाद
फोन : 079-27553586

वेयावच्च का महत्व -

परमात्मा महावीर ने शास्त्रों में फरमाया है -

जो गिलाणं पडियरइ सो मं पडिअरति।

'जो ग्लान की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है, वह तीर्थंकर की सेवा करता है', तीर्थंकर के श्रीमुख से इस प्रकार का प्रतिपादन सेवा के उत्कृष्ट महत्व को प्रकट करता है। उत्तराध्ययन सूत्र के सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन में परमात्मा महावीर गणधर गौतम स्वामी के जिज्ञासा भाव को समाहित करते हुए कहते हैं-

वेयावच्चेणं भंते! जीवे कि जणयइ?
वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धई॥

भगवन्! वेयावच्च से जीव क्या प्राप्त करता है?

गौतम! वेयावच्च से जीव तीर्थंकर नाम कर्म का बंध करता हैं। निश्चित ही सेवा का ये महान् गुण विरले व्यक्ति में ही पाया जाता है। यह भी वेयावच्च के महात्म्य का उद्घोषक तत्व है कि चरण सित्तरि के सत्तर गुणों में द्वादशविध तप में वेयावच्च का अन्तर्भाव हो जाने पर भी वेयावच्च को पृथक रूप से भी ग्रहण किया गया। स्व-पर उपकारी स्वरूप यह महान् गुण जिन नाम कर्म बंध के बीस स्थानों में से सत्तरवें स्थान में भी सूचित किया गया है।

भगवती सूत्र में भी इसका महिमा गान स्पष्ट रूप से प्रकट है-जो श्रमण अथवा श्रमणोपासक प्रासुक-एषणीय अन्न, जल आदि के द्वारा आचार्य आदि की सेवा करता है, वह कर्म की दीर्घ स्थिति को तोड़ देता है, दुष्ट कर्म संचय विसर्जन करता और इससे भी विशिष्ट अपूर्वकरणपूर्वक ग्रंथि भेद एवं निर्वृत्तिकरण के द्वारा सम्यक्दर्शन को उपलब्ध होता है। तदुपरान्त क्रमशः सिद्ध-बुद्ध-मुक्त और परिनिर्वाण अवस्था को प्राप्त करता है।

हम इतिहास के सुनहरे प्रसंगों पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें यह अभिज्ञात होता है कि शास्त्रों में सेवा गुण के द्वारा अनेक भव्यात्माओं ने अपनी आत्मा का उद्धार-निस्तार किया हैं।

इतिहास के दर्पण में -

1. श्री आदिनाथ भगवान ने प्रथम धनसार्थवाह के भव में साधु को घृत प्रदान करके सम्यक्दर्शन को प्राप्त किया और क्रमशः तीर्थंकर बनकर सिद्धत्व की आभा से आलोकित हुए।
2. इसी तरह श्रमण भगवंत महावीर ने नये सार के भव में साधु को अन्न-जल का प्रतिलाभ प्रदान कर सम्यक्त्व उपार्जन करके भविष्यकाल में शासनपति वर्धमान स्वामी बने।
3. बाहु और सुबाहु, दोनों साधुओं ने प्रतिदिन 500-500 साधुओं की वेयावच्च के परिणामस्वरूप एक ने चक्रवर्ती पद प्राप्त किया और दूसरा महाबली बाहुबली बना। इसके साथ आदिनाथ के जीवानन्द वैद्य के भव में कुष्ठ रोग से अभिभूत साधु की सेवा हेतु बिना मूल्य के गोशीर्ष चन्दन एवं रत्नकम्बल देने वाला व्यापारी भी प्रव्रज्या स्वीकार कर शिव पद का अधिकारी बना।
4. वेयावच्च के संदर्भ में जिनका नाम शासन-नभ में दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में चमक रहा हैं, ऐसे वेयावच्च

तत्पर नन्दीषेण मुनि के सुयश की सुवास मात्र मानव लोक में ही नहीं अपितु सुरेन्द्र लोक में भी पहुँची। उसमें भी कारण वेयावच्च नामक अनुत्तर गुण ही था।

5. साध्वी पुष्पचूला को गोचरी लाते हुए केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उसमें भी आचार्य भगवंत की सेवा ही प्रमुख कारण था। इस संदर्भ में रेवती श्राविका, चन्दनबाला आदि अनेक दृष्टान्त दृष्टव्य हैं।

वेयावच्च गुण अप्रतिपाती है-

महान्तो ज्ञानिनः सन्ति, महान्तो ध्यानिनस्तथा।
तेभ्योऽपि सुमहन्ताश्च, सन्ति सेवा परायणाः।।

ज्ञानी महान् है, ध्यानी महान् है पर इन दोनों से भी बढ़कर उन्हें महान् कहा गया है जो सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं क्योंकि सेवा को साधना का निचोड़ कहा गया है। यदि आत्मा में सेवा का धर्म प्रकट नहीं होता तो उसकी ज्ञान-ध्यान, सारी साधनाएँ अधूरी रह जाती हैं।

जिस प्रकार बीज का फल तरूवर है, सूर्य का फल प्रकाश है, फूल का फल सुवास है, उसी प्रकार अमृतोपम ज्ञानादि साधना का फल वेयावच्च है।

वेयावच्चं निययं करहे, उत्तम-गुणे धरंताणं।
सव्वं किर पडिवाई, वेयावच्चं अपडिवाई।।५३४।।
पडिभग्गस्स मयस्स व, नासइ चरणं सुयं अगुणणाए।
न हु वेयावच्चचिअं, सुहोदयंणासए कम्मं।।५३५।।

ओघ निर्युक्ति ग्रंथ की उपरोक्त दो गाथाएँ अपने आप में वेयावच्च के संदर्भ में विशिष्ट महात्म्य को प्रस्तुत करती हैं-क्षमा, मृदुता, ऋजुता, निर्लोभता आदि उत्तम गुणों को धारण करने वाले साधुओं की नित्य वेयावच्च करनी चाहिए क्योंकि ज्ञानादि समस्त गुण प्रतिपाती हैं परन्तु वेयावच्च अप्रतिपाती हैं क्योंकि उत्प्रवजित अथवा मृत साधु का चारित्र्य नष्ट हो जाता है, श्रुत भी विनष्ट हो जाता है परन्तु वेयावृत्त्य-सेवा रूपी गुण से प्रतिबद्ध शुभ कर्म विपाक कदापि नष्ट नहीं होता।

सेवा का अधिकारी-अनधिकारी

शास्त्रों में सेवा के अधिकारी और अनधिकारी, दोनों के संदर्भ में चर्चा उपलब्ध होती हैं। सेवा का अधिकारी वह है जिसे चिकित्सा विधि का ज्ञान हो, जो अहंकार से मुक्त और पवित्रता से युक्त हो। वह व्यक्ति सेवा का अनधिकारी है जो आलसी, बहुभोजी, अतिनिद्र, क्रोधी, अहंकारी, मायावी, लोभी और कुतुहलप्रिय हो।

शास्त्रों में यह भी कहा गया कि जो साधु तपस्वी हो अथवा शास्त्रों के सूत्र और अर्थ रूप अमृत को पाने में अपने आपको पूर्णतया नियोजित करता हो अथवा रूग्ण हो, उनकी निर्मल भाव से सेवा करनी चाहिए।

श्रावक जीवन में सेवा का महत्त्व -

हम देखते हैं कि हमारे जन्म से जीवन और मृत्यु पर्यन्त इस सृष्टि का उपकार ही उपकार हैं। सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, जल, प्रकाश, हवा, पर्वत, इतना ही नहीं, इस पृथ्वी का कण-कण

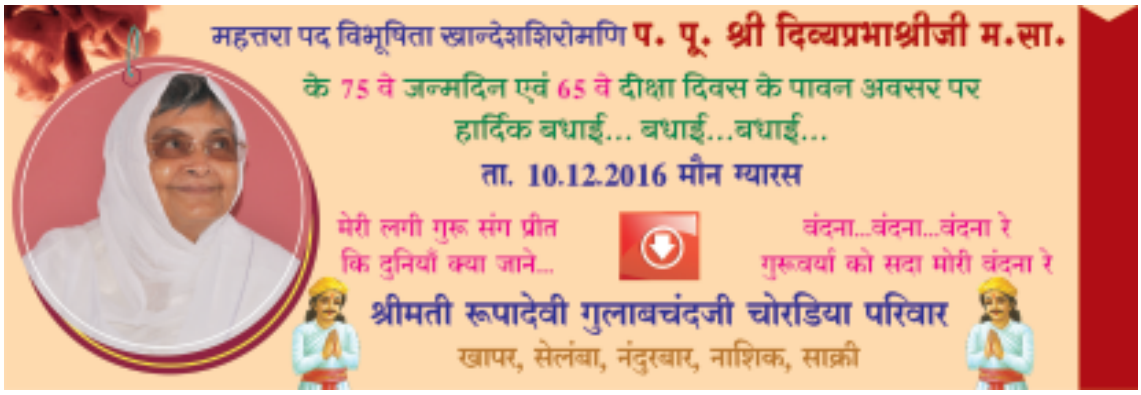

हमारा उपकारी हैं परन्तु उसकी सेवा सहज रूप से अभिव्यक्त होती हैं। इसी तरह श्रावक का भी संघ के प्रति सेवा का कर्त्तव्य कहा गया है।

स्वधर्मी को धर्म में स्थिर न करना दर्शनाचार के आठ अतिचारों में से एक अतिचार है। यदि कोई श्रावक तन-मन-धन से शक्तिमान् होने पर भी अपने स्वधर्मी की आपत्तिकाल में सेवा नहीं करता, उसे धर्म-दर्शन स्थिर नहीं करता तो उसका सम्यक्त्व मलिन होता है।

* सेवा से बढ़कर न कोई धर्म है, न कोई सुख है, न कोई यश है इसलिये श्रावक का कर्त्तव्य है कि वह-

- जिसके पास धन न हो, उसे धन दें।
- जो रूका हुआ है, उसे गति दें।
- जो बिगड़ा हुआ है, उसे मति दें।
- जो दु:खी है, उसे सम्बल दें।

व्यवहारिक जीवन में सेवा-

हम आये दिन देखते हैं कि कहीं कोई पशु रोग से कराह रहा है, कोई अनाथ अभावों से पीड़ित हैं, कोई गरीब गरीबी से लाचार है, ऐसी स्थिति में हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम रोगी को औषधि का, भूखे को भोजन का और प्यासे को पानी पिलाकर व्यवहारिक सेवा को क्रियान्वित करें तथा दु:खी को सहानुभूति का, अज्ञानी को ज्ञान का, अधर्मी को धर्म एवं कुमार्गी को बोध देकर पारमार्थिक सेवा के गुण को सार्थक करें।

विमल विचार से मन पवित्र होता है, निर्मल आचार से तन पवित्र होता है, नि:स्वार्थ दान से धन पवित्र होता है परन्तु निस्पृह सेवा से तो तन-मन-धन ही नहीं, सकल जीवन पवित्र हो जाता है।

अपना ही कोई भाई कमजोर हो अथवा पड़ौसी दु:खी में हो उस समय उसका दु:ख दूर किये बिना अन्न, जल ग्रहण एवं पर्यटन करना उस व्यक्ति को प्रिय नहीं लग सकता जिसने सेवा/परोपकार और वेयावच्च के अमृत फल को जाना है।

कर्म काटने वाला शस्त्र-वेयावच्च

शास्त्रकार फरमाते हैं कि -

''वेयावच्चेण भंते! जीवे किं जणयइ?
गोयम! नीयागोयं कम्मं न बंधई।''

वेयावच्च करने से नीच गोत्र का बंध नहीं होता अर्थात्-उच्च गोत्र का बंध होता है। वह देवलोकगामी होता है। अर्थात् सेवा के द्वारा अपने तन को सार्थक करने वाला भाग्यशाली इस भव में सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करता ही है, इसके साथ-साथ मोक्ष प्राप्ति पर्यन्त आर्य-देश, उच्च-कुल, उत्तम-संस्कार, अहिंसा-धर्म, अपरिग्रह-आचार और अनेकान्त-विचार के वैभव को धर्म की विरासत में प्राप्त करता है और अपने वसीयत नामे में आने वाली पीढ़ियों के लिए सेवा-धर्म का शुभ संदेश छोड़ जाता है।

याद रखिये -

1. सेवा करना पर सेवा को बार-बार जताना नहीं!
2. सेवा करते समय मुख पर थकान लाना नहीं!
3. सेवा करने के बाद कभी पछताना नहीं!

इतिहास के पन्नों से

भंसाली गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

भण्डसालिक/भण्डसाली/भणसाली/भंसाली एक ही गोत्र है। इस गोत्र की स्थापना के संबंध में दो मत प्राप्त होते हैं। एक मत के अनुसार इस गोत्र की स्थापना खरतरबिरूद प्राप्त कर्त्ता आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि द्वारा हुई, जबकि दूसरे मत के अनुसार इस गोत्र के स्थापक प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि थे।

भणसाली गोत्र के इतिहास का बोध प्राप्त करने के लिये हमें पश्चिमी राजस्थान के लौद्रवपुर की यात्रा करनी होगी। तब लौद्रवपुर उस क्षेत्र की राजधानी थी। विराट् नगर था। लोदू जाति के क्षत्रियों का शासन चलता था। 10वीं शताब्दी के प्रारंभ में भाटी देवराज ने लोदू क्षत्रियों को परास्त कर इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। 11वीं शताब्दी में इस राज्य पर सागर नामक राजा राज्य करते थे। उनके 11 पुत्र थे, उनमें से 8 पुत्र मृगी रोग के शिकार होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गये। इस कारण राजा समेत पूरा राज परिवार चिंता में पड गया।

विहार करते हुए आचार्य भगवंत श्री जिनेश्वरसूरि जब लौद्रवपुर पधारे, तो राज परिवार उनके दर्शनार्थ पहुँचा। धर्मदेशना सुनने के बाद बोला– आपसे देशना का अमृत प्राप्त कर हम धन्यभागी हुए हैं। सच्चे धर्म का बोध हुआ है। आपको ही गुरु के रूप में मैं और पूरा परिवार स्वीकार करते हैं। आप हम पर कृपा बरसायें!

तदुपरान्त अपनी चिंता को स्वर देते हुए राजा ने पूज्य आचार्यश्री से निवेदन किया– भगवन! आप त्यागी और चमत्कारी महापुरूष है। आपके चेहरे पर जो तेज छाया हुआ है, वह आपकी विशिष्ट साधना और वचनसिद्धि का परिचायक है। हे प्रभो! मेरे 11 पुत्र थे। 8 मृत्यु को प्राप्त हो गये। शेष बचे इन तीन पुत्रों के लिये मैं बहुत चिन्तित हूँ। रात दिन मुझे यह चिंता सताती है कि कहीं ये तीनों पुत्र भी कालकवलित न हो जाये। आप ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि ये तीनों पुत्र जीवित रहें।

उनकी प्रार्थना सुनकर आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि ने उन्हें सम्यक्त्व प्रदान करते हुए आदेश दिया कि एक पुत्र को राजा बनाओ। बाकी दोनों पुत्रों को श्रावक बनाओ।

राजा ने उनके आदेश को शिरोधार्य किया। पूज्य आचार्यश्री ने वहीं उस भंडार की साल में पट्ट पर बिराजमान होकर श्रीधर और राजधर नामक दोनों राजपुत्रों के सिर पर वासचूर्ण डाल कर श्रावकत्व की दीक्षा प्रदान की।

वासचूर्ण भंडार की साल में डालने के कारण उन दोनों राजपुत्रों की परम्परा को भण्डसाली गोत्र पूज्य आचार्यश्री ने प्रदान किया।

बीकानेर निवासी उपाध्याय श्री जयचन्द्र गणि के संग्रह में एक प्राचीन हस्तलिखित प्रपत्र है, जिसमें भणसाली गोत्र के इतिहास का वर्णन अंकित है। उसके अनुसार आचार्य जिनेश्वरसूरि ने इस गोत्र की स्थापना की। उक्त कथानक इस प्रपत्र में अंकित है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के ग्रन्थ भंडार में उपलब्ध एक हस्तलिखित ग्रंथ व नाहर ग्रंथागार में उपलब्ध एक हस्तलिखित ग्रन्थ में उक्त इतिहास का उल्लेख प्राप्त होता है। लौद्रवपुर मंदिर में 17वीं शताब्दी के उत्कीर्णित शतदल पद्म यंत्र से भी इस कथानक की पुष्टि होती है। इन प्रमाणों के आधार पर वि.सं. 1091 में इस गोत्र की स्थापना हुई थी।

भाटों और कुलगुरूओं की बहियों के अनुसार यह गोत्र यादव कुल के भाटी राजपूतों से वि. सं. 1196 में स्थापित हुआ है। इस इतिहास के अनुसार वि. 1196 में लौद्रवपुर में भाटी सगर नामक राजा राज्य करते थे। उनके तीन पुत्र थे। कुलधर, श्रीधर व राजधर! दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि विहार करते हुए लौद्रवपुर पधारे। उनका सानिध्य प्राप्त कर

राजा प्रतिबोध को प्राप्त हुआ। राजा ने सपरिवार जैनधर्म की दीक्षा ग्रहण करते हुए श्रावकत्व स्वीकार कर लिया।

दादा गुरुदेव भंडार की साल में बिराजमान थे। वहीं पर राजपरिवार को वासचूर्ण डालकर उन्हें जैनधर्म में दीक्षित किया। भंडार की साल में वासक्षेप करने के परिणाम स्वरूप उन्हें भण्डसाली गोत्र प्रदान किया गया। दादा गुरुदेव से प्रेरणा प्राप्त कर श्रीधर व राजधर के पुत्रों ने वहाँ पार्श्वनाथ परमात्मा का भव्य जिनमंदिर बनवाया।

भणसाली गोत्र के इतिहास के संदर्भ में एक और कथा भी उपलब्ध होती है। जोधपुर के श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन मंदिर के तलघर में संरक्षित हस्तलिखित ज्ञान भंडार में एक प्राचीन पत्र उपलब्ध है, जिसमें भंसाली गोत्र के इतिहास का विस्तार से वर्णन किया है।

इस प्रपत्र के अनुसार भणसोल नामक नगर पर भाटी भादोजी राज करते थे। जब उस नगर पर यवनों का आक्रमण हुआ तो उससे उबरने के लिये दादा गुरुदेवश्री जिनदत्तसूरि की सेवा में पहुँचे। दादा गुरुदेव ने उनकी प्रार्थना सुनकर अपने साधना बल से पूरे राज्य को सुरक्षित कर लिया। परिणामस्वरूप प्रभावित होकर तथा उनकी देशना से धर्म के शुद्ध स्वरूप का बोध प्राप्त कर राजा के साथ साथ उनके भाई रिडमलजी ने भी जैनधर्म स्वीकार कर लिया। इसके ही साथ राजा के सुपुत्र हरिकिशन ने संयम ग्रहण कर लिया। भणसोल नगरी के हिसाब से गुरुदेव ने उन्हें भणसाली गोत्र प्रदान किया।

इस प्रपत्र में भादोजी के वंशजों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है कि भादोजी के वंशज कोटडे, राजा री ढाणी, उमरकाट, मेवानगर, खारीवावर-कच्छ, जोधपुर, समदडी, बालोतरा, मंडोर, करमावास, गुडा, जैतारण, दुंदाडे, दइकडा, जालोर, गुडा, अहमदाबाद आदि नगरों में जाकर बस गये।

महाजन वंश मुक्तावली में भंसाली गोत्र की उत्पत्ति के विषय में एक अलग कथानक प्राप्त होता है। उस कथानक के अनुसार लौद्रवपुर के राजा धीराजी भाटी की धर्मपत्नी रानी को ब्रह्म राक्षस लग गया था। उस ब्रह्मराक्षस के कारण कभी तो वह भूखी ही रहती। और कभी खाने बैठती तो सौ आदमियों का भोजन वह अकेली कर जाती। राजा चिंता में पड गया। बहुत से मंत्रवादियों को बुलाया। मंत्रवादी मंत्र पढना शुरू कर देते कि वह रानी खुद ही सारा मंत्र बोल जाती। मंत्रवादियों की चिकित्सा काम नहीं आई।

उस समय दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि का लौद्रवपुर पधारना हुआ। उनकी यशोगाथाऐं राजा के कानों में पडी। वह आशा लेकर गुरुदेव के दरबार में पहुँचा।

दादा गुरुदेव ने सूरिमंत्र आदि विशिष्ट मंत्रों से अभिमंत्रित वासक्षेप उस रानी के सिर पर डाला। ब्रह्म राक्षस बोल उठा- गुरुदेव! मुझे क्षमा करो। मैं आज से आपका दासानुदास हूँ।

गुरूदेव ने कहा- आज के बाद कभी भी इस परिवार को सताने की कोशिष मत करना।

ब्रह्मराक्षस बोला- हे गुरुदेव! मैं पूर्व भव में इसी राजा का कथावाचक था। धर्म की कथाऐं इन्हें सुनाता था। किसी पर्व के दिन मैंने धर्म कथा सुनाते हुए राजा से कहा- हे राजन्! जगदम्बा माता है। इन्हें मांस मदिरा चढाना उचित नहीं है। माता तो वात्सल्य देने वाली होती है। वह अपने पुत्रों की हिंसा नहीं करती। अत: बलिविधान करना अधर्म है।

मेरी बात सुनकर राजा ने क्रोध में आकर मुझे मृत्यु दण्ड दे दिया। मैं व्यंतर निकाय में देव बना। पूर्व भव के वैर वश इनके कुल का नाश करने की इच्छा से इन्हें सता रहा था।

हे राजन्! मेरी बात मानना। यदि तुम अपना भविष्य उज्ज्वल चाहते हो तो दादा जिनदत्तसूरि जैसे महान् आचार्य की शरण ले लेना। ब्रह्म राक्षस रानी के शरीर का त्याग कर अपनी निकाय में चला गया। जाते जाते चमत्कार दिखाने के लिये गढ़ (किले) का दरवाजा जो उत्तर में था, उसे पूर्व में कर दिया।

राज परिवार गुरुदेव से अत्यन्त प्रभावित हुआ। धर्म का शुद्ध स्वरूप समझा और वासक्षेप ग्रहण कर जैन धर्म अंगीकार किया। भंडसाल में वासक्षेप करने के परिणाम

स्वरूप भणसाली गोत्र स्थापित हुआ।

अलग अलग प्राप्त कथाओं में कुछ तथ्य एक समान है। 1. भाटी धीरोजी से यह गोत्र चला। 2. लौद्रवपुर में इस गोत्र की स्थापना हुई। 3. भंडसाल में वासक्षेप करने के कारण भण्डसाली गोत्र स्थापित हुआ।

अब प्रश्न है कि इस गोत्र के स्थापक आचार्य जिनेश्वरसूरि हैं या जिनदत्तसूरि!

चिंतन करने से ऐसा ज्ञात होता है कि आचार्य जिनेश्वरसूरि ने इस गोत्र की स्थापना की थी। काल के प्रभाव से परिवार जनों में पुनः मिथ्यात्व का प्रवेश होते देख कर दादा जिनदत्तसूरि ने इस गोत्र का पुनरूद्धार किया। एतदर्थ दादा जिनदत्तसूरि इस गोत्र के संस्थापक माने जाते हैं।

दादा जिनदत्तसूरि के जीवन की एक घटना भंसाली गोत्र के श्रावक से संबंधित है। वे विहार कर एक बार पाटण पधारे थे, तब अम्बड नाम के एक द्वेषी श्रावक ने गोचरी गये साधुओं को जहर वहोरा दिया था। गुरुदेव की नजर ज्योंहि पात्र पर पडी, उन्हें अपनी दिव्य दृष्टि से पल भर में पता चल गया। उन्होंने उसी समय परम भक्त सुश्रावक आभु भणसाली को बुलाकर उनसे निर्विष मुद्रिका मंगवाई। उस मुद्रिका को पात्र में डाल दी। मुद्रिका ने सारा जहर चूस लिया। आहार निर्विष हो गया।

इस भंसाली गोत्र में श्रीधरजी की 18/19वीं पीढी के श्रावक थाहरू शाह बहुत प्रतापी श्रावक हुए। श्रीधरजी ने लौद्रवपुर में पार्श्वनाथ परमात्मा का जिनमंदिर निर्मित किया था, जिसे बाद में मुहम्मद अलाउद्दीन खिलजी ने तोड दिया था। थाहरूशाह भंसाली ने उस मंदिर का पुनरूद्धार कराया। वि.सं. 1675 में इस मंदिर की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनराजसूरिजी म. से करवाई। लौद्रवपुर तीर्थ की अद्भुत वास्तुकला, अनूठा स्थापत्य हर यात्री को प्रभावित करता है। श्री थाहरूशाह ने जैसलमेर व आगरा में जिन मंदिर बनवाये। जैसलमेर में उपाश्रय का निर्माण भी करवाया। ज्ञान भंडार की स्थापना की। नये ग्रन्थ लिखवाये। कितने ही ग्रन्थ स्वर्णाक्षरों में लिखवाये।

श्री थाहरूशाह ने आचार्य जिनराजसूरि की पावन निश्रा में वि. 1682 में सिद्धाचलजी का विशाल संघ निकाला। उस संघ में जिस रथ में परमात्मा को बिराजमान करके सिद्धाचल पधारे थे, वह रथ आज भी लौद्रवाजी तीर्थ में सुरक्षित है। इसी संघ में महोपाध्याय श्री समयसुन्दरजी महाराज ने शत्रुंजय रास की रचना की थी।

श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर खरतरवसही में उन्होंने आचार्य जिनराजसूरि के करकमलों से चौबीस तीर्थंकर परमात्मा के 1452 गणधरों की पादुकाओं की प्रतिष्ठा वि. सं. 1682 ज्येष्ठ वदि 10 को संपन्न करवाई।

राय भंसाली, खर भंसाली, चंडालिया, भूरा, बद्धाणी, चील मेहता ये सभी भंसाली गोत्र की ही शाखाऐं हैं। इन गोत्रों का इतिहास-विवरण अगले अंक में प्रस्तुत होगा।

जैसलमेर आदि कई नगरों में ज्ञान भंडारों की स्थापना करने वाले आचार्य जिनभद्रसूरि इसी गोत्र के रत्न थे। खरतरगच्छ की आचार्य शाखा में 17वीं शताब्दी में हुए आचार्य जिनधर्मसूरि इसी गोत्र के थे। वर्तमान में इस गोत्र के मुनि मनीषप्रभसागर, महत्तरा दिव्यप्रभाश्रीजी, विशालप्रभाश्रीजी, विश्वज्योतिश्रीजी, सिद्धांजनाश्रीजी, संयमप्रज्ञाश्रीजी, प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी आदि साधु साध्वी शासन प्रभावना कर रहे हैं।

प. पू. खरतरगच्छाधिपती आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र की पीठिका की साधना पूर्ण करने पर हार्दिक अभिनन्दन

वंदनकर्त्ता

शांतिलाल, कांतिलाल, ललित कुमार, महावीरचन्द, बालचन्द, निशिता एवं समस्त लूणिया परिवार-ऊटी

S. K. Finance

128, Main Bazar, Ooty-643001

Cell : 94430 43548, 0423 2446318

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

चुल्लग शतक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

समय का चक्र अपनी गति से गतिमान रहता है। उसे तीव्र अथवा मन्द करना असंभव है परन्तु कभी कभी ऐसी परिस्थिति बन जाती है कि कुछ पल युग की भाँति भासित होते हैं और कभी-कभी घंटों का समय भी एक पल की तरह प्रतीत होता है।

आज कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा था आलंभिका नगरी की धर्म-प्राण जनता को।

परमात्मा महावीर का अपूर्व समवसरण!

पैंतीस गुणसंयुत् अलौकिक दिव्य देशना!

मालकोश राग में बहती देशना की निर्मल गंगोत्री!

जितना सौम्य था उनका निर्दोष सौन्दर्य, उतनी ही अनूठी थी आत्म जागरण की वचनावलियाँ!

सैंकड़ों-हजारों नहीं, लाखों-करोड़ों सागरों से भी गंभीर परन्तु अत्यन्त सरल, सहज, मनभावन और हृदय को छू लेने वाली थी उनकी दुर्लभ देशना।

साध्वीवृंद और देवियाँ करबद्ध खड़ी-खड़ी कर रही थी परमान्न से भी अनन्त गुणा मधुर आप्त वाणी का रसपान! कुतुहल अथवा छल-प्रपंच से आये थे अनेक जीव परन्तु अब कोई संशय अथवा ढोंग नहीं रहा था उनके आत्मा-प्रदेशों में । श्रोताओं में एक आसन्न मोक्षगामी आत्मा थी-चुल्लगशतक!

यद्यपि उन्हें अपनी ऋद्धि-समृद्धि तथा मान-बहुमान का गर्व था। वे छह करोड़ स्वर्णमुद्राओं और छह गोकुलों के स्वामी थे परन्तु देशना के स्वच्छ दर्पण में आज ही उन्हें स्वयं की दरिद्रता का भान हुआ था।

अरे! मैं जिसका अभिमान करता रहा, वे सभी पद-पदार्थ विनश्वर हैं। दुनिया की यह सबसे बड़ी विडम्बना है कि वह नश्वर पदार्थों को पाकर ईश्वर को विस्मृत कर जाता है।

आज मुझे मेरी उस कमी का ख्याल हो आया है, जिसके कारण यह सारी समृद्धि अधूरी है।

प्रभु-बोधामृत से प्रतिबुद्ध हो वह आत्म-ज्ञान की उस महत्त्वपूर्ण भूमिका तक पहुँच गया, जहाँ सम्यग्दर्शन का अद्वितीय दीपक जगमगा रहा था।

टूटी मिथ्यात्व की निबिड़ ग्रंथियाँ! अपूर्वकरण के द्वारा हुआ कुटिल-जटिल ग्रंथि का भेदन और उस भव्यात्मा ने प्रथम गुणस्थान से चतुर्थ गुणस्थान में प्रविष्ट हो इष्ट-अनिष्ट की हंस-दृष्टि प्राप्त कर ली।

कृतकृत्यता से भावविभोर हो चुल्लगशतक चरम सीमा पर पहुँचते पहुँचते भरी सभा के मध्य खड़े होकर विनंती करने लगा- प्रभो! आपका आगमन, मेरे भाग्य का स्वर्णिम उदयकाल।

भ्रमवश मैं पाषाण को चिन्तामणि मानता रहा पर आज ही समझ पाया हूँ कि इन दोनों में भेद क्या है? आज मेरी दृष्टि वहाँ पहुँची, जहाँ देहातीत अवस्था का मीठा झरणा बह रहा है।

कृपा करके मुझ अबोध-अज्ञानी को शरण देकर पात्रतानुसार संघ के रंग में रंग लीजिये। धर्म-सभा का हर सदस्य गद्‌गद् था। सभी के नयन और मन चुल्लगशतक की ओर थे।

वत्स! अपने स्वरूप को जानो। धर्माचरण से इस मनुष्य देह को सफल करो। प्रभु ने भव्य पात्र जानकर श्रावकचर्या के बारह व्रत प्रदान किये।

चुल्लगशतक का जिनाज्ञाप्रधान जीवन अब पूर्णरूपेण

बदल चुका था! संवेग और निर्वेद की रोशनी में उसका रोम-रोम दमक उठा। धन-प्रतिष्ठा धर्म प्रतिष्ठा और आत्म निष्ठा में ढल गयी।

चौदह वर्षों के बाद परमात्मा महावीर के परम आज्ञांकित श्रावक के रूप में प्रतिष्ठित चुल्लगशतक ने प्रतिमा-साधना की दिव्य संकल्पना में प्रवेश किया।

चतुर्थ पौषध प्रतिमा की महासाधना के दौरान एक रात उपसर्गों की सौगात ले आयी।

हे चुल्लग! सुन रहा है न तूं? यह धर्म का ढोंग छोड़ और ढंग का जीवन शुरू कर! चुल्लग का अटल संकल्प - सुमेरु जब जरा भी नहीं हिला तब उसने चारों पुत्रों को मारने की धमकी दी-देखता हूँ! तुझे पुत्र प्यारे हैं या धर्म? जब चुल्लगशतक की ओर से कोई जवाब नहीं मिला, तब उसने चारों पुत्रों को एक के बाद एक यमलोक भेज दिया।

अविचल पराक्रम को कमजोर करने के लिये उसने धन-मोह का पासा फैंका-देख! यदि तुझे इन अठारह करोड़ स्वर्णमुद्राओं का स्वामी बने रहना है, तो धर्म छोड़ना ही होगा! एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती। या तो धर्म रहेगा, या धन।

पुत्र-हत्या की माया में स्थिर चुल्लगशतक धन-माया में चल-विचल हो गये। कायोत्सर्ग भंग कर जैसे ही देव को पकड़ने के लिये दौड़े, दिव्य-शक्ति सम्पन्न वह देव अदृश्य हो गया। इस कोलाहल से पूरा परिवार क्षणार्द्ध में ही जाग गया।

संभ्रान्त चुल्लग की बात को सुनकर बहुला देव के माया-जाल को पल भर में समझ गयी। उसने धर्मपत्नी होने के दायित्व को निभाते हुए कहा-स्वामिन्! प्रतिमा-साधना में श्रमण के समान हैं आप, फिर आपको सन्तान अथवा सम्पत्ति से मोह कैसा?

संसार के जाल-जंजाल से मुक्त होने के लिये प्रतिमा-साधक बने और पुनः संसार के माया-जाल में उलझ गये। आपको आनंद, कामदेव जैसे श्रावकरत्नों की परम्परा को और अधिक गौरवान्वित करना है, अतः संसार की चिन्ता छोड़कर आत्म चिन्तन में सजग बनना ही आपका एक मात्र धर्म और कर्म है।

निर्बल निमित्त जीव को भटका देता है परन्तु जिसने परमात्मा के शासन और आत्मानुशासन को समझा है, वह तुरन्त सावधान हो जाता है।

धर्मपत्नी के शब्द साधनारोहण में प्रबल निमित्त बने और श्रावक श्रेष्ठ अपनी श्रेष्ठ आत्म-साधना में ऐसे संकल्पबद्ध हुए कि एक दिन महासाधना के शिखर को छू लिया।

मृत्यु हर जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। चुल्लगशतक इस घटना से परे नहीं थे। जीवन का अंतिम एक मास अनशन व्रत में व्यतीत कर समाधि मरण को प्राप्त हुए। सौधर्म देवलोक में सुरायु पूर्ण कर वे महाविदेह क्षेत्र के दिव्य प्रांगण में संयम की अलौकिक साधना सम्पन्न कर सिद्ध बनेंगे और अनन्तकाल तक अयोगी अवस्था में रमण करेंगे।

विशेष आलेख

स्वर्गारोहण द्विशताब्दी २८-१२-२०१६ पट

विद्वद्शिरोमणि महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म.

प्रस्तुति– मणि गुरु चरणरज आर्य मेहुलप्रभसागर

चतुर्विध संघ की महिमा का गान स्वयं तीर्थंकर भगवंत देशना के पूर्व नमो तित्थस्स कहकर करते है। उसी संघ के प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म.सा. का नाम विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग के गीतार्थ, विद्वान एवं लोकमान्य साधु के रूप में विख्यात हैं। इसी कारण उनके द्वारा रचित कृतियां आज जन–जन के मुख से सस्वर होती है।

श्रीमद् क्षमाकल्याण जी सचमुच क्षमा और कल्याण–मंगल के अवतार ही थे। बीकानेर के समीपवर्ती गांव केसरदेसर के ओसवाल वंशीय मालु गौत्र में विक्रम संवत् 1801 में आपका जन्म हुआ। जन्म का नाम खुशालचन्द था। विक्रम संवत् 1812 में 11 वर्ष की लघुवय में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनभक्तिसूरिजी म. के विजयी राज्य में वाचक श्री अमृतधर्मजी महाराज के निकट दीक्षा–साधना का कठोर–मार्ग स्वीकार किया। इस घटना से उनके परिवार की सांस्कृतिक रुचि का परिज्ञान होता है।

प्रसंगतः एक बात का उल्लेख अनिवार्य लगता है कि जिस परम्परा में आपने कंटकाकीर्ण साधना मार्ग अंगीकार किया, वह सुविहित या विधिमार्गी परम्परा के रूप में शताब्दियों से जैन समाज में ही नहीं, अपितु, विद्वद्समाज में भी सुविख्यात रहा है। जैन साहित्य के विकास एवं संरक्षण में इस सुविहित मार्ग के अनुसरण करने वालों का बहुत बड़ा अवदान रहा है।

आपका दीक्षाकुल जितना उज्ज्वल एवं प्रेरणाप्रद था, उतना ही विद्याकुल भी विद्वद्मंडल का समूह था। पूज्य श्री राजसोमजी महाराज जैसे प्रतिभासम्पन्न विद्वान् के श्री चरणों में बैठ कर सिद्धान्त, न्याय और साहित्यादि विषयों का ज्ञानार्जन किया एवं उपाध्याय श्री रामविजयजी महाराज के निकट सविनय अन्य विषयों का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर शासन और संस्कृति के उत्तरदायित्व को अल्पवय में ही भलीभाँति समझ लिया था।

सत्य के आधार पर विरुद–पद धारण करने वालों की परम्परा सत्याश्रयी सिद्धान्तों के प्रति उत्तरदायी रहे यह स्वाभाविक ही है। आचार्य श्री जिनभक्तिसूरिजी महराज सुविहित परम्परा के सड़सठवें आचार्य हुए हैं। उस समय यति समाज में बढ़ते हुए भीषण शिथिलाचार को रोकने के लिए इसी परम्परा के कतिपय महारथियों ने अहिंसक क्रांति कर, जैन शासन के उच्च विचारों के प्रकाश में, आचारमूलक मार्ग को प्रशस्त बनाए रखा।

श्री क्षमाकल्याणजी म. के समय में एक ओर दिनानुदिन शैथिल्य वृद्धिगत हो रहा था, किन्तु ज्ञानगर्भित या गुणमूलक वैराग्य होने के कारण उन पर बाह्य

वातावरण का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। अल्पवयी दीक्षित व्यक्ति को यदि सांस्कृतिक वातावरण व समुचित पथ प्रदर्शन प्राप्त हो तो निस्संदेह वह आगे चल कर प्रतापपूर्ण प्रतिभा का निर्माण कर सकता है। उन्होंने समत्वमूलक एवं आत्मकल्याण की विराट् और प्रशस्त भावनाओं के द्वारा वातावरण को बदल दिया। इसी वजह से उनके जीवन में इन भावनाओं का प्रकटीकरण स्पष्ट दिखता है।

व्यक्ति के विशिष्ट व्यक्तित्व का वास्तविक ज्ञान उसके शारीरिक वैभव से नहीं, अपितु उसकी साधना और साहित्य के गंभीर मनन द्वारा ही संभव है। सूक्ष्म चिंतन के साथ यदि उसे व्यक्त करने की कला जीवन में विकसित नहीं हुई, तो जनसामान्य अपेक्षाकृत अल्प ही लाभान्वित होता है। यों तो व्यक्तित्व के प्रकाशन के लिए जीवन की कतिपय घटनाएं ही पर्याप्त हो सकती हैं, किन्तु उनसे अंतर्तम रहस्य तक पहुंचना सभी के लिए सम्भव नहीं।

श्री क्षमाकल्याणजी का साहित्यिक जीवन और सांस्कृतिक व्यक्तित्व कितना उच्च व गम्भीर था, उनका सैद्धान्तिक ज्ञान कितना उच्च कोटि का था एवं सत्य के प्रति वे कितने आग्रही थे, यह तो उनकी विशिष्ट साहित्यिक निधि से ही स्पष्ट हो जाता है। पचास से भी अधिक ग्रंथों का निर्माण कर आपने जैनसाहित्य में जो अभिवृद्धि की है, वह आज भी अनुकरणीय है। व्याकरण, प्रश्नोत्तर, काव्य, स्तोत्र, गेय, चरित्र, न्याय और कथा आदि विषयों का आपके साहित्य में विशेष रूप से समावेश हुआ है।

उनके हृदय का कलाकार जागरुक मानवता का प्रतीक था। जिस किसी विषय पर आपने लेखनी चलाई उसे इतने सुन्दर रूप से आलोकित किया कि उन्हें पढ़कर पाठकों को दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है।

आपका जीवन साहित्यिक प्रतिभाओं से सम्पर्कित होने के कारण, आलोचनामूलक शैली अल्प वय में ही आपमें विकसित हो चुकी थी, जिसका वास्तविक परिचय गौतमीय महाकाव्य की टीका में परिलक्षित होता है। गम्भीर रहस्यों का उद्घाटन संयमशील साधक ही कर सकता है।

विद्वद्भोग्य साहित्य की सृष्टि के साथ आपने सामान्य जनता के लिए भी उच्चतम विचारों को राजस्थानी व मारूगुर्जर भाषा द्वारा प्रवाहित कर भारतीय लोकचेतना को उद्बुद्ध करने में सहायता दी है।

पाठकप्रवर के संस्कृत साहित्य विषयक प्रकांड पांडित्य के परिज्ञान के लिए यह टीका इसीलिए पर्याप्त है कि इसमें आपने कोष, व्याकरण से लगा कर उच्च कोटि के सिद्धान्त और तत्त्वज्ञान के मूल ग्रंथों की पंक्तियां देकर, स्वमतपोषण कर, विशिष्ट विद्वत्ता व व्यापक अवगाहन का परिचय दिया है। 29 वर्ष की अवस्था की यह कृति उनके साहित्यिक गाम्भीर्य का ज्वलंत प्रतीक हैं।

साहित्य मनोविलास या मनोविनोद के लिये न होकर, वह, जनता का प्रकाश स्तम्भ बने, इसी उच्चतम भावनाओं से अनुप्राणित होकर आपने लोकभाषा द्वारा लोकसाहित्य की भी सृष्टि की।

विद्वद्भोग्य साहित्य की सृष्टि के साथ आपने सामान्य जनता के लिए भी उच्चतम विचारों को राजस्थानी व मारुगुर्जर भाषा द्वारा प्रवाहित कर भारतीय लोकचेतना को उद्बुद्ध करने में सहायता दी है। उसी श्रेणी में परमात्म भक्ति से ओतप्रोत मन ने शताधिक गेय रचनाएँ कर भक्तों को भावप्रवण भेंट देकर सम्यक्त्व को स्थिर किया। तो थावच्चापुत्र अणगार चौढालिया, जिनाज्ञा महत्व गीत, भगवती सूत्रभक्ति गीत, गुरुवंदन के बत्तीस दोष वर्णन गीत आदि में हुई सरस भावप्रस्तुति से पूरा वातावरण भावों की तल्लीनता का अनुभव करता है।

भूधातु वृत्ति से जहां आपकी व्याकरण के तलस्पर्शी ज्ञान की झलक मिलती है, तो तर्कसंग्रह फक्किका, मुक्तावली फक्किका (अप्राप्य) आदि ग्रंथों में आपकी प्रांजल न्यायशैली देख दंग रह जाते हैं।

आपका सिद्धान्त था कि वर्ग विशेष या अमुक समाज के लिए ही साहित्य न लिखा जाना चाहिए बल्कि, मानव मात्र अनुप्राणित हो सके एवं प्रत्येक व्यक्ति प्रकाश और प्रेरणा पा सके ऐसी रचनाएं से, क्योंकि ऐसा साहित्य ही जनसाहित्य की कोटि में आ सकता है।

आपके द्वारा रचित साधुविधि प्रकाश, श्रावकविधि प्रकाश, प्रतिक्रमण हेतु विचार जैसे ग्रंथ आपकी

क्रियाशीलता की पहचान उजागर करते हैं, वहीं प्रश्नोत्तर सार्धशतक, विचार शतक बीजक आदि ग्रन्थ आपकी आगम शास्त्रों की अजोड़ पकड को सिद्ध करते हैं।

पाठक प्रवर का पूर्ण शब्दचित्र हमारे सम्मुख न होते हुए भी उनकी साधना–समन्वित वाणी से तो कल्पना की ही जा सकती है कि वे जन जागरण के प्रति कितने सजग थे।

स्वमत पोषण व संयम की साधना आपकी अन्तश्चेतना के प्रतीक थे तो अतीत के प्रति भी आप जागरुक थे। उज्ज्वल अतीत को आपने खरतरगच्छ पट्टावली के रूप में लिपिबद्ध कर इतिहास विषयक ज्ञान का भी परिचय दिया है। जिसमें अनेक समुचित कारणों का उल्लेख कर पूर्वाचार्यों के प्रति अपनी भावांजलि प्रकट की है।

संसार में कुछ ही ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो महान् पुरुषों के विचारों को जीवन में स्थान दे कर न केवल वे ही सदा के लिए अमर हो जाते हैं, अपितु, अमरत्व की ऐसी परम्परा भी छोड़ जाते हैं, जिन पर शताब्दियों तक मानवता गर्व ले सके। ऐसा ही कार्य पाठकप्रवर ने किया।

तात्कालिक सामन्तवादी युग में भी साधनाशील परिष्कृत व्यक्तित्व के कारण ही वे राजा महाराजाओं तक को प्रभावित करने में सफल रहे। जैसलमेर के रावल मूलराज तो आपसे इतने प्रभावित थे और इतनी निकटता रखते थे, कि जिसके फलस्वरूप उनके लिये आपको विज्ञानचंद्रिका नामक स्वतन्त्र ग्रंथ ही बनाना पड़ा।

पाठक–प्रवरश्री का साहित्यिक जीवन विक्रम संवत् 1929 से चवालिस सालों तक निरंतर जारी रहा। भूधातुवृत्ति आपकी प्रथम कृति है और समरादित्य चरित्र अन्तिम रचना है।

उपाध्यायजी का सैद्धान्तिक ज्ञान इतना गम्भीर और व्यापक था कि जटिल प्रश्नों के उत्तर देने में वे कभी नहीं हिचके। गच्छ के प्रतिष्ठित आचार्य भी उनकी सैद्धान्तिक सम्मति को बहुत महत्व देते थे। अन्यगच्छ के विशिष्ट विद्वान् भी उनकी सम्मति को बहुत ही आदर व श्रद्धा की दृष्टि से मानते थे। बल्कि कहना यों चाहिये कि तात्कालिक गुणग्राही परम्परा जनजीवन में जीवित होने के कारण विभिन्न जैन सम्प्रदाय के मुनि आपके निकट विद्यार्जन करने में गर्व का अनुभव करते थे।

जीवन की साधना ही वाणी की अखंड परम्परा का निर्माण करती है। संयमशील साधक की वाणी ही प्राणी मात्र के हृदय को स्पर्श करती है। यही कारण है कि श्री क्षमाकल्याणजी जैन समाज के विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बद्ध होते हुए भी, उनकी औपदेशिक वाणी का प्रभाव इतना व्यापक था कि झोंपड़ों से लगा कर राजमहलों में रहने वाले समान रूप से श्रवण करने में गौरवान्वित होते थे। तात्कालिक सामन्तवादी युग में भी साधनाशील परिष्कृत व्यक्तित्व के कारण ही वे राजा महाराजाओं तक को प्रभावित करने में सफल रहे। जैसलमेर के रावल मूलराज तो आपसे इतने प्रभावित थे और इतनी निकटता रखते थे, कि जिसके फलस्वरुप उनके लिये आपको विज्ञानचंद्रिका नामक स्वतन्त्र ग्रंथ ही बनाना पड़ा।

पाठकप्रवर जीवन के रूप में जीना और जिलाना जानते थे, तभी तो विक्रम संवत् 1838 में वसन्तपंचमी के दिन आपने सिद्धाचल तीर्थ में सिद्ध या अचल को ही अपना केन्द्रबिन्दु मान कर, परिग्रह का सर्वथा परित्याग कर, यति समाज में बढती हुई चिन्तनीय शिथिलता को आपने अपने जीवन की आहुति देकर रोका।

श्री क्षमाकल्याणजी महाराज ने चाहे कितने ही बसन्त देखे हों, किन्तु, उनके जीवन का सफल व प्रेरणाप्रद बसन्त, वसंत पंचमी सम्वत् 1838 का बसंत है। यह बसन्त इस महापुरुष के त्याग का स्पर्श पाकर सदा के लिए अमर बन गया।

उनकी विमलवाणी आज भी हम अपने कंठ में स्थापित कर आनन्द विभोर हो जाते हैं। उनके स्तवन एवं स्तोत्रों में उनके जीवन की साधना, कला के द्वारा आज भी चमकती हुई दृष्टिगोचर होती है।

वर्तमान में खरतरगच्छीय साधु–साध्वीजी भगवंत जिस वासचूर्ण का उपयोग करते हैं, उसे संपूर्ण विधि–विधान के साथ पाठकप्रवर ने ही अभिमंत्रित किया था। वही वासचूर्ण गुरुपरंपरानुसार आज तक दीक्षा, बडी दीक्षा, योगोद्वहन, पदारोहण आदि प्रत्येक विधि–विधान में आपका नाम लेकर निक्षेप किया जाता है। ऐसा उदाहरण समग्र जिनशासन में विरल ही है।

पाठकप्रवर का विचरण क्षेत्र राजस्थान, गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश आदि में प्रमुखता से हुआ।

जीवन के उत्तरकाल में आप बीकानेर नगर में बिराज रहे थे। अवस्था व हरसरोग, फोड़े–फुंसी की व्याधि के कारण स्थिरवास में भी आप प्रतिदिन उपाश्रय से चार कि.मी. दूर अवस्थित भांडासर मंदिर के दर्शन करने प्रतिदिन पधारते थे।

आपने अपने जीवन काल के चौदह महत्वपूर्ण चातुर्मास जैसलमेर में किये। उस समय आपके द्वारा लिखी गयी एवं आपके गुरुदेव वाचक श्री अमृतधर्मजी महाराज द्वारा उपदेश देकर लिखवाई गई अनेक प्रतियां जैसलमेर के जिनभद्रसूरि ज्ञानभंडार की शान बढा रही है। साथ ही बीकानेर के महिमाभक्ति आदि ज्ञानभंडार, अभय ग्रंथालय, पालीताना स्थित श्री जिनहरिसागरसूरि ज्ञानभंडार, कोबा स्थित श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र आदि में भी आपके द्वारा लिखित व रचित अनेक प्रतियां संरक्षित हैं।

महोपाध्यायजी का स्वर्गवास बीकानेर में वि.सं. 1873 पौष वदि 14 को हुआ था। इस वर्ष पौष वदि 14 बुधवार ता. 28 दिसम्बर 2016 को उनके स्वर्गवास के दो सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् के अधिवेशन में खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज द्वारा की गई घोषणानुसार पूरे भारत में विविध जिनभक्ति व गुणानुवाद के कार्य किये जा रहे हैं।

महोपाध्यायजी श्री की कृतियों को प्रकाश में लाने का श्रेय परम पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी महाराज, उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज व मुनि श्री मंगलसागरजी महाराज, प्रकांड विद्वान मुनि श्री जिनविजयजी महाराज, अगरचंदजी भंवरलालजी नाहटा और महोपाध्याय विनयसागरजी को है।

आपके द्वारा रचित अनेक रचनाएँ अद्यावधि अप्रकाशित हैं। अद्यावधि प्राप्य समग्र 180 कृतियों में से 121 लघुकृतियों का संकलन मेरे द्वारा किया जा रहा है।

पूज्यश्री के स्वर्गारोहण द्विशताब्दी के अवसर पर उनके पवित्र चरणों में भावों के सुंदर सुमन की अंजलियां समर्पित है।

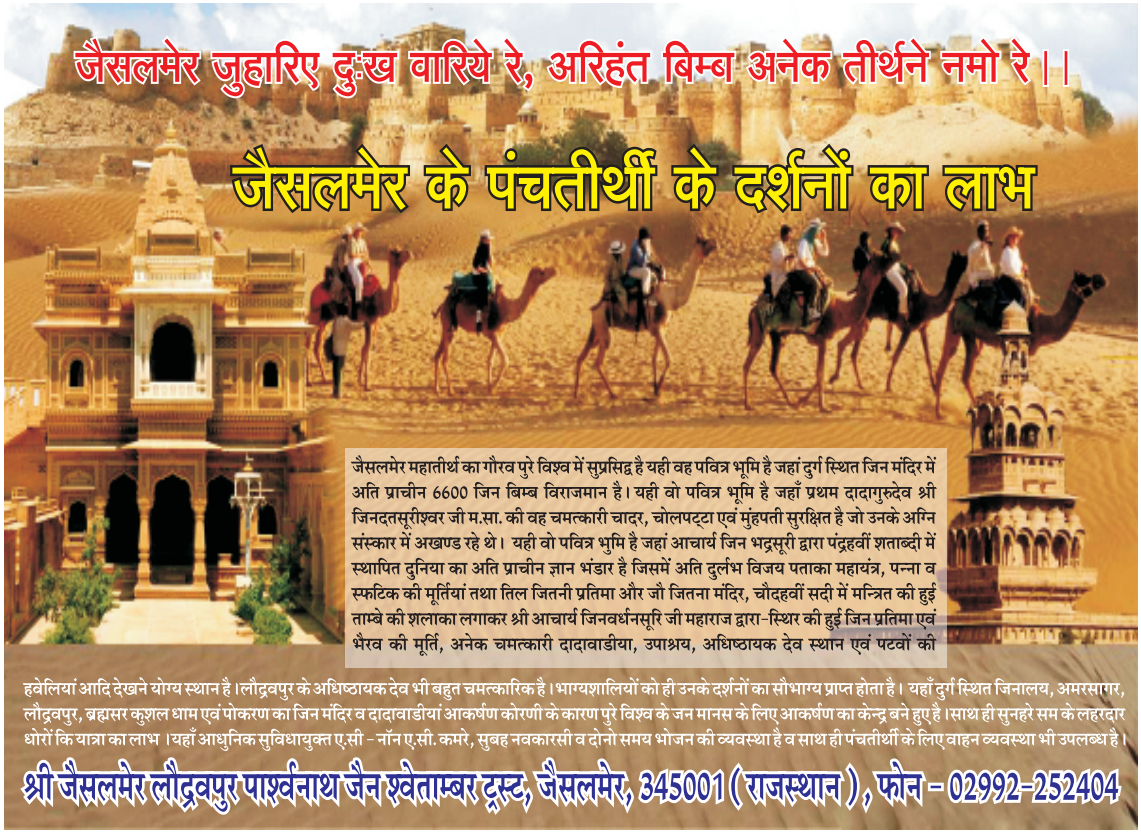

समाचार दर्शन

सूरिमंत्र की प्रथम पीठिका की साधना सम्पन्न

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र की प्रथम पीठिका की इक्कीस दिवसीय साधना दिनांक 03 अक्टूबर से शुरू हुई और उसका निर्विघ्न सानन्द समापन समारोह 23 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। इस साधना के अन्तर्गत पूज्यश्री सम्पूर्ण तौर पर मौन के साथ सूरिमंत्र के जप और तप में लीन रहे। 23 अक्टूबर को सुबह 5.20 बजे आयोजित हवन–पूजन के कार्यक्रम में श्रावकों ने पूजा परिधान पहनकर भाग लिया। प्रातः 9.30 बजे आचार्यश्री के सम्मान में गाजे–बाजे के साथ जुलूस निकाला गया। जुलूस में हजारों की संख्या में श्रावक–श्राविकाओं और बाहर से आए श्रद्धालुओं ने भाग लिया। आचार्यश्री ने सुबह 10 बजे प्रवचन स्थल सुखसागर प्रवचन–वाटिका में प्रवेश किया।

आचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में उनकी मंत्र साधना की सफलता के लिए श्रावक–श्राविकाओं द्वारा किए गए नवकार मंत्र जाप के लिए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी सूरिमंत्र प्रथम पीठिका मौन–साधना आनन्ददायी रही। यह ज्ञातव्य है कि संपूर्ण भारत में स्थान स्थान पर पूज्यश्री की साधना के निर्विघ्न लक्ष्य के लिये नवकार महामंत्र की आराधना, जाप, आयंबिल आदि का आयोजन किया गया। संपूर्ण एकान्त में मौन रहकर की गई इस मंत्र साधना को आचार्यश्री ने आचार्यपद प्राप्ति के बाद के अपने उत्तरदायित्व का पूर्तिकारक बताया।

आचार्यश्री ने बचपन में ही दीक्षा लेने की चर्चा करते हुए अपनी माताजी श्री रतनमालाश्री जी म.सा. को प्रेरणास्रोत बताया और कहा कि मेरी माता उन लाखों माताओं में श्रेष्ठ हैं जो अपने बेटों को जन्म देकर पालन–पोषण करती है और विवाह के सपने देखती हैं। परन्तु मेरी माता ने तो मुझे और मेरी बहिन दोनों दीक्षा की प्रेरणा दी, इससे अधिक खुद ने भी दीक्षा का पथ स्वीकार किया।

आचार्यश्री ने बताया कि सूरिमंत्र में पांच पीठिकाऐं होती हैं। इन पांच पीठिकाओं में क्रमशः सरस्वती, त्रिभुवनस्वामिनी, महालक्ष्मी, गणिपिटक यक्षराज और गौतमस्वामी की आराधना की जाती है।

इस अवसर पर अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चेन्नई से आए सुप्रसिद्ध आराधक सुश्रावक श्री मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने संगीतमय भक्तिगीतों की प्रस्तुति दी। उनकी अभिव्यक्ति ने श्री संघ को मंत्र मुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री से सोने की स्याही से हस्तलिखित आगम वहोराया गया। आगम वहोराने का लाभ बाडमेर निवासी श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड परिवार हरसाणी मुंबई वालों ने लिया।

कार्यक्रम के अन्त में आचार्यश्री ने महामांगलिक सुनाई। सभा में मुकेश प्रजापत का बहुमान किया। यह उल्लेखनीय है कि उपरोक्त साधना की निर्विघ्न पूर्णता हेतु दुर्ग के साथ–साथ इचलकरंजी, तलोदा, सूरत–शहर, सूरत दर्शन सोसायटी, बैंगलोर, नंदुरबार, जोधपुर, शंखेश्वर, पालीताना, बाडमेर, उदयपुर, नवसारी, मुंबई, भुज, दिल्ली, नई दिल्ली, खेतिया, दोंडाइचा, महासमुन्द, रायपुर, चोहटन, सांचोर, बूढा–कवीन्द्रनगर, इन्दौर, मोकलसर आदि कई स्थानों पर इक्कीस दिवस तक नवकार मंत्र की साधना का आयोजन हुआ।

महामांगलिक के पावन अवसर पर रायपुर, धमतरी, राजनांदगांव, महासमुन्द, मुंगेली, खरियार रोड, बिलासपुर, जगदलपुर, कवर्धा, बालाघाट, गोंदिया, कटनी, बैंगलोर, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद, सूरत, हैदराबाद, सांचोर आदि कई स्थानों से बडी संख्या में गुरु भक्तों का आगमन हुआ।

रायपुर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को

रायपुर में श्री संतोषजी बैद परिवार की ओर से भैरव नगर सोसायटी में अपने द्वारा अर्पण किये गये भूखण्ड में स्वद्रव्य से निर्मित हो रहे श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा वैशाख वदि 10 शुक्रवार ता. 21 अप्रेल 2017 को संपन्न होगी।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी। गतवर्ष पूज्य आचार्यश्री के रायपुर चातुर्मास में इस मंदिर का भूमिपूजन व शिलान्यास कराया गया था। एक–सवा वर्ष में ही इस मंदिर दादावाडी का निर्माण संपन्न होने जा रहा है।

मंदिर दादावाडी के कार्य की पूर्णता के लिये श्री संतोषजी बैद व उनका पूरा परिवार, मित्रजन पूरी तरह से जुट गये हैं। प्रतिष्ठा समारोह निमित्त तीन दिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव का आयोजन किया जायेगा।

दुर्ग से छह री पालित संघ

दुर्ग नगर से पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. ठाणा 5 की पावन निश्रा में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं चातुर्मास समिति दुर्ग के तत्वावधान में दुर्ग नगर से उवसग्गहर पार्श्वनाथ तीर्थ होते हुए कैवल्यधाम तीर्थ के लिये पंच दिवसीय छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन किया गया है। इस संघ का आयोजन श्री भूरमलजी पतासी देवी बरडिया परिवार की ओर से होने जा रहा है।

ता. 28 अक्टूबर को प्रवचन सभा में बरडिया परिवार व श्री संघ ने पूज्यश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने कार्तिक पूर्णिमा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। ता. 14 को संघ दुर्ग नगर से प्रस्थान कर नगपुरा तीर्थ पहुँचेगा, जहाँ तीर्थ वंदना करके सिद्धाचल तीर्थ की भावयात्रा का कार्यक्रम होगा। ता. 15 को नगपुरा से विहार कर दुर्ग आयेगा, जहाँ बरडिया परिवार की ओर से जीवराशि क्षमापना का कार्यक्रम होगा। ता. 16 को भिलाई होते हुए ता. 17 को कैवल्य धाम पहुँचेगा । ता. 18 को कैवल्यधाम में संघपति मालारोपण का विधान होगा।

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षा दिवस के शुभ प्रसंग पर भाव–सहित बधाईयां...
ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

माँ कहती है- बेटा! रो मत!
गुरू माता कहती है- बेटा सो मत!!
वंदनकर्त्ता
पुखराज-कमलाबाई, जसराज-सौ कांतादेवी
उत्तमचंद-सौ सुशीलादेवी, रमेश कुमार-सौ इंदू देवी
दिनेश कुमार-सौ राजकुमारी गुलेच्छा परिवार

Firm :
खानदान ज्वेलर्स
49/2, N.S.C. Bose road,
CHENNAI-79
(Cell : 8925300000)

बालोतरा में इतिहास रचा गया

प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागर जी म. सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ठाणा 2 का राजस्थान के बालोतरा नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास चल रहा है। इस ऐतिहासिक चातुर्मास के दौरान विविध धार्मिक तपश्चयाऐं संपन्न हुई। पू. उपाध्याय श्री की सरल व सहज वाणी से बालोतरा के श्रद्धालुगण बहुत ही प्रभावित हुए हैं।

पू. उपाध्याय श्री से श्वेताम्बर जैन समाज तो जुडा ही है, महत्वपूर्ण बात यह है कि जैनेतर समाज व स्थानीय श्री दिगंबर जैन समाज पूर्ण रूप से जुड़ गया है। दिगम्बर परम्परानुसार दश लक्षण पर्व पूज्यश्री के सानिध्य में संपन्न हुए। दशों दिन पूज्यश्री के दिगम्बर मंदिर में प्रवचन हुए। ''माली-समाज'' भी प्रतिदिन प्रवचन आदि का पूर्ण लाभ ले रहा है। परिणामस्वरूप पू. उपाध्याय श्री के प्रवचन तीन दिन ''गांधीपुरा माली-समाज भवन'' में हुए। पूरा माली-समाज खूब भक्ति भावना से लाभ ले रहा है, जैन व सभी जैनेतर तप जप में जुड़ा हुआ है। पू. उपाध्याय श्री की प्रेरणा से माली-समाज के कई श्रद्धालुओं ने ''रात्रि-भोजन, एवं जमीकन्द वगैरह के त्याग किया। चातुर्मासिक व्याख्यान में प्रतिदिन बडी संख्या में श्रद्धालुगण ज्ञान लाभ ले रहे हैं।

उदयपुर में प्रतिष्ठा

उदयपुर नगर में सुप्रसिद्ध बापना दादावाडी में काला गोरा भैरव की प्रतिष्ठा ता. 19 नवम्बर को संपन्न होगी। यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

दो दिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत ता. 18 को अठारह अभिषेक का कार्यक्रम होगा। ता. 19 को प्रतिष्ठा के बाद दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी।

पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. का द्विशताब्दी अवसर

पूज्य महोपाध्याय क्रियोद्धारक श्री क्षमाकल्याणजी महाराज के स्वर्गवास को 200 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं।

उनका स्वर्गवास बीकानेर में वि.सं. 1873 पौष वदि 14 को हुआ था। इस वर्ष स्वर्गवास के पौष वदि 14 बुधवार ता. 28 दिसम्बर 2016 को दो सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं।

इस उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों का संकलन कर संपादन का कार्य कर रहे हैं।

उनके द्वारा रचे गये काफी ग्रन्थ अप्रकाशित हैं। उन ग्रन्थों का संकलन विविध ज्ञान भंडारों में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर कर रहे हैं। अभी तक उन्होंने पूज्यश्री की 121 रचनाओं का संकलन किया है। द्विशताब्दी अवसर पर इस संकलन का प्रकाशन कर उन्हें भावांजलि अर्पण की जायेगी।

दुर्ग में विमोचन समारोह

दुर्ग! 18 सितम्बर स्थानीय ऋषभ नगर में चल रहे चातुर्मास के अंतर्गत पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में सुपरिचित साहित्यकार रावलमल जैन मणि की 108 वीं कृति 'आवरण से अनावरण की ओर' तथा साहित्यकार, सेवा निवृत्त निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुशील त्रिवेदी की कृतियाँ 'छ.ग. के 39 नक्षत्र' का विमोचन एक गरिमामय समारोह में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति, प्रमुख लोकायुक्त एस.एन. श्रीवास्तव थे। इस अवसर पर जैनाचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरि म.सा., मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्रीवास्तव, पत्रकार रमेश नैय्यर, साहित्यकार दानेश्वर शर्मा ने अपने विचार रखें। वक्ताओं ने कहा कि संत और साहित्य ही किसी भी देश और समाज की संस्कृति के प्रमुख उन्नयन व रक्षक होते हैं। वक्ताओं ने श्री मणि तथा डॉ. त्रिवेदी को उनके साहित्य के विमोचन के लिये बधाई देते हुए अपनी ओर से अनेक शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर उपरोक्त साहित्यकारों के अलावा मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति एस.एन श्रीवास्तव, साहित्यकार दानेश्वर शर्मा पत्रकार रमेश नैय्यर, मयंक चतुर्वेदी, भूरमल बरड़िया, प्रो के.एल.वर्मा, डॉ. जे. आर. सोनी, डॉ. निर्वाण तिवारी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बिसराराम यादव का बहुमान किया गया। कार्यक्रम में साहित्यकार एवं श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा के मैनेजिंग ट्रस्टी रावलमल जैन मणि ने रविशंकर विश्वविद्यालय में शीघ्र प्रारम्भ किये जाने वाले जैन पीठ की स्थापना के कार्य में हो रही प्रगति की जानकारी दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने आज की पीढ़ी के साहित्य से दूर जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज शिक्षा से ज्यादा संस्कृति की शिक्षा देना जरूरी है। वर्तमान शिक्षा के स्वर बदलना बहुत जरूरी है। वर्तमान शिक्षा से देश के प्रति समर्पित व्यक्तित्व नहीं बनाया जा सकता। आज अनपढ़ ठगा जा रहा है तो उसे ठगने वाला भी अपनी बौद्धिकता की आड़ में उसे ठग रहा है। यह संस्कारों की शिक्षा न होने से हो रहा है। उन्होंने रावलमल जैन मणि के हृदय की विशालता और उदारता की चर्चा करते हुए बताया कि अनजाने व्यक्ति पर भी द्रवित होकर लाखों रुपयों का सहयोग कर देते हैं।

मुख्य अतिथि जस्टिस एस.एन. श्रीवास्तव संत साहित्यकार को देश की अमूल्य धरोहर निरुपित करते हुए कहा कि भारत में इस्लाम सहित कई लोग बाहर से आये, देश को हजारों वर्ष तक गुलाम बनाकर रखा। तमाम हमलों के बावजूद हमारे संत मनीषियों और साहित्यकारों की सजगता के चलते वे भारत की संस्कृति को नष्ट नहीं कर सके। जस्टिस श्रीवास्तव ने श्री मणि को ऋषि परम्परा का साहित्यकार बताते हुए उम्मीद जताई कि उनकी कृतियों से भारतीय समाज को ज्ञान का नया प्रकाश मिलेगा। साहित्यकार दानेश्वरी शर्मा ने रावलमल जैन और डॉ. सुशील त्रिवेदी के

कृतियों के विमोचन पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होने श्री मणि के द्वारा 108 पुस्तकों के लिख देने का विशेष रुप से उल्लेख करते हुए कहा कि मेरे छोटे भाई श्री मणि की कृति को पाकर वही प्रसन्नता हो रही जो किसी गुरु को अपने शिष्य की बड़ी उपलब्धि पर होती है।

वरिष्ठ पत्रकार रमेश नैय्यर ने पुस्तकों को भारतीय संस्कृति की धरोहर निरुपित करते हुए कहा कि हमारे देश में जैन समाज व अन्य समाज द्वारा पाण्डुलिपि तक को सहेज कर रखने की गौरवशाली परम्परा है। लोग पुस्तकों पाण्डुलिपियों की रक्षा अपनी जान गंवाकर भी करते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति और साहित्य की विशद विवेचना की। उन्होंने कहा कि लार्ड मेकाले की शिक्षा पद्धति को व्यर्थ ही 67 वर्षो से ढोया जा रहा है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की वैदिक शिक्षा और वाचिक परम्परा को पुर्नजीवित करते हुए जरूरत पर जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुधीर शर्मा ने किया।

उपधान तप का माला महोत्सव 8 नवम्बर को

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में दुर्ग नगर में चल रहे महामंगलकारी उपधान तप का माला महोत्सव कार्तिक शुक्ल अष्टमी ता. 8 नवम्बर को होगा। इस निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव का प्रारंभ 4 नवम्बर को होगा। ता. 4 से त्रिदिवसीय अर्हन् महापूजन का आयोजन होगा। ता. 7 को माला का वरघोडा निकाला जायेगा। ता. 8 को मालारोपण विधान होगा। विधि विधान कराने के लिये मक्षी तीर्थ से श्री हेमन्त भाई आयेंगे। जबकि संगीत से भक्ति का रंग जमाने के लिये सुप्रसिद्ध संगीतकार नरेन्द्र भाई वाणीगोता पधारेंगे।

प्रेषक : कांतिलाल बोथरा, सहसंयोजक चातुर्मास समिति, दुर्ग

आचार्य पद की प्रथम पीठिका की साधना के उपलक्ष्य में

राजधानी रायपुर में प्रतिदिन दो से तीन श्रद्धालुओं ने रखा आयम्बिल व्रत

छत्तीसगढ़ के दुर्ग में चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज साहब द्वारा आचार्य पद की प्रथम पीठिका का 21 दिवसीय अनुष्ठान सानंद सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री ने अनवरत 21 दिनों तक तपश्चर्या के साथ मौन साधना की। उनके इस अनुष्ठान की मंगलमय पूर्णाहुति हो, इस मनोरथ से सम्पूर्ण भारतवर्ष के काफी संघों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने नवकार महामंत्र की 21 दिनों तक पांच माला सहित पांच-पांच आयम्बिल व्रत किया। रायपुर श्रीसंघ के मध्य भी प्रतिदिन आयम्बिल व्रत एवं नवकार मंत्र साधना चली।

प्रतिदिन दो से तीन श्रावक-श्राविकाओं ने आयम्बिल व्रत रखा एवं नवकार महामंत्र की पांच माला का जाप किया। आयम्बिल व्रत एवं नवकार महामंत्र जाप करने वाले कुल 51 श्रावक-श्राविकाओं को श्री जैन श्वेताम्बर चातुर्मास समिति, रायपुर की ओर से सम्मानित किया गया।

चातुर्मास समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोचर, महासचिव हरीश डागा व डॉ. धरमचंद रामपुरिया ने बताया कि 2 अक्टूबर से पूज्य आचार्य भगवंत द्वारा किए गये इस अनुष्ठान की पूर्णाहुति 23 अक्टुबर को हुई। जिनशासन की प्रभावना एवं धर्मप्रकाश में अभिवृद्धि की मंगलमयी कामना के साथ आचार्य भगवंत ने अपने इस अनुष्ठान की पूर्णाहुति के अवसर पर हजारों की संख्या में एकत्र श्रावक-श्राविकाओं को महामंगलिक प्रदान की। राजधानी रायपुर से सैकड़ों श्रद्धालु आचार्य भगवंत के श्रीमुख से महामंगलिक का श्रवणलाभ लेने दुर्ग पहुंचे।

श्री अशोकजी छाजेड का बहुमान

मूल रूप से हरसाणी बाड़मेर निवासी हाल नवी मुंबई के नामी, गिरामी बिल्डर एव् समाजसेवी श्री अशोककुमार जी, भंवरलाल जी छाजेड़ (सी.एस.डी.अरिहंत सुपर स्ट्रक्चर) को नवभारत की प्रस्तुति रियल्टी बिजनैस एचिव एवार्ड 2016 के अंतर्गत मोस्ट इस्टीम्ड ऑनगोइंग ऑफ दी ईयर पुरस्कार 24.10.16 को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फड़नवीस एवं नवभारत के संपादक महेश्वरी जी के हाथों से सम्मानित किया गया।

श्री अशोक कुमार जी छाजेड़ को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाये।

पैदल संघ का आयोजन

पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दो पैदल संघों का आयोजन होने जा रहा है।

एक संघ दोंडाइचा से बलसाणा का ता. 19 नवम्बर को चलेगा जिसका माल महोत्सव ता. 21 नवम्बर को होगा। इस संघ का आयोजन श्री श्यामलालजी पन्नालालजी बोथरा दोंडाइचा निवासी की ओर से हो रहा है।

दूसरा संघ नंदुरबार श्री संघ की ओर से आयोजित होगा। ता. 14 दिसम्बर को नंदुरबार से रवाना होकर ता. 17 दिसम्बर को माला विधान होगा।

हैदराबाद में पंच परमेष्ठि पूजन सम्पन्न

श्री महावीर स्वामी जैन श्वे. संघ फीलखाना हैदराबाद के तत्वावधान में महावीर भवन में संगीतमय पंच परमेष्ठि पूजन का आयोजन पूजनीया खान्देश शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या प.पू. साध्वी विराग ज्योति श्रीजी म.सा. प.पू. विश्व ज्योति श्री जी म.सा. एवं प.पू. साध्वी जिन ज्योति श्रीजी म.सा. के सानिध्य में भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ।

पूजन में अरिहंत पद पूजा का लाभ केसरीमलजी संकलेचा परिवार ने, सिद्धपद पूजा का प्रवीण कुमार जी जुगराज जी संकलेचा परिवार ने, आचार्य पद पूजा का श्रीमती सुकी देवी वीरचन्दजी हुँडिया परिवार ने, उपाध्याय पद पूजा का मूलचन्दजी जसराज जी बाफणा परिवार ने, साधु पद पूजा का संघवी राजेन्द्र कुमारजी चंपालालजी सोनवाडिया परिवार ने लिया।

पूजन के पश्चात् श्री संघ के अल्पाहार का लाभ श्री नैणमल जी हीराणी बाफना परिवार पादरू वालों ने लिया। पूज्य साध्वीजी की निश्रा में दि. 18 से 20 अक्टुबर को त्रि दिवसीय धार्मिक शिक्षण- ज्ञान वर्धक शिविर सम्पन्न हुआ। उसमें विशाल संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। अब तक संघ में विशेष उत्साह से धार्मिक आराधनाऐं सम्पन्न हुई। प्रतिदिन पू. साध्वीजी म. के ओजस्वी प्रवचन का सकल संघ लाभ उठा रहा है।

जैन ट्रस्ट चुलै द्वारा विकलांग शिविर

आदिनाथ जैन ट्रस्ट द्वारा प्रतिमाह अनुसार आज ता. 22.10.2016 को उमा सूरज पैलेस में विशाल विकलांग सहायता शिविर का आयोजन किया गया। इस कैम्प में पधारे सभी विकलांग लोगों को उनकी जरूरत के अनुसार आर्टिफीशल लिम्ब, कलचेस, व्हील, चेयर, ट्रायसिकल, हियरींग-हड, चश्में ओर अनेक जरूरत की वस्तुऐं पुर्णता नि:शुल्क वितरित की गई।

इस कैम्प में अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस कैम्प के मुख्य लाभार्थी श्री प्रशांत जी शांतिलाल शाह-हर्षल ग्राफिक्स थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती शांतिलाल जी शाह, हर्षा प्रशान्त जी शाह, सर्जन डॉ. राधाकृष्णन, श्री प्रकाशचन्दजी गोलेच्छा, श्री अशोक जी गोठी, चन्द्रमोली आदि उपस्थित थे। उपस्थित डॉ. एवम् अतिथियों ने ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यो की भूरि भूरि प्रशंसा की। स्वागत भाषण ट्रस्ट के उपाध्यक्ष मनोज जैन ने दिया।

ट्रस्ट के सचिव मोहन जैन द्वारा मांस, मदिरा से होने वाले-नुकसान के बारे में समझाकर, त्याग का आह्वान किया गया। ट्रस्ट की सेवा योजनाओं के बारे में मोहन जैन द्वारा विस्तार पूर्वक उपस्थित अतिथियों व जनता को जानकारी दी गई। कैम्प के पश्चात् अल्पहार की व्यवस्था भी लाभार्थी परिवार द्वारा रखी गई।

महासमुन्द में चार्तुमासिक अराधना निमीत्त महापूजन सम्पन्न जैन मंदिर में महापूजन सम्पन्न

महासमुन्द। स्थानीय श्वेताबंर जैन श्री संघ को इस वर्ष पुण्योदय से चार्तुमास हेतु खारतरगच्छाधिपती आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया बहिन म. डॉ. प.पू. विद्युत्प्रभा श्री जी म. सा. की सुशिष्याऐं प.पू. डॉ. शासन प्रभा श्रीजी म. सा. एवं प.पू. डॉ. विज्ञाजंना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 2 का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ है। प.पू. शासन प्रभा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से 22 जुलाई से प्रारंभ 68 दिवसीय नवकार जाप के पूर्णाहुति एवं चार्तुमासिक साधना, आराधना, निमित्त 4 दिवसीय महापूजन का आयोजन 4 अक्टूबर से किया गया।

गुरूवर्या की पावन प्रेरणा से चार्तुमास पर्व के अन्तर्गत जप, तप, ज्ञान की त्रिवेणी बह रही है। अनेकानेक धार्मिक अनुष्ठान, तपस्याओं सहित 68 दिवसीय नवकार महामंत्र जाप प्रतिदिन रात्रि 8:30 से 9:30 बजे तक किया गया। ता. 4 अक्टूबर को श्री नवकार महापूजन नवलखा जाप समिति की ओर से, द्वितीय दिवस 5 अक्टूबर को जयतिहुअण महापूजन श्री केशरीचंद जी स्वरूपचंद जी लुनिया परिवार, तृतीय दिवस 6 अक्टूबर को दादागुरूदेव महापूजन गणेशमल जी, प्रदीपचंद जी झाबक परिवार एवं चतुर्थ दिवस 7 अक्टूबर को पार्श्व पद्मावती महापूजन प्रेमचंद सतीश कुमार जी चोपड़ा परिवार की ओर से पढाया गया। इन महापूजनों में शहर की आपा-धापी एवं भाग-दौड़ के उपरान्त भी जैन धर्मावलंबियों की धार्मिक चेतना स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

सभी महापूजनों में लाभार्थी परिवार के साथ-साथ अन्य लोगों द्वारा भी जोड़े से भाग लिया गया। महापूजन पढ़ाने के लिए विधिकारक श्री राजूभाई शाह एवं ग्रुप मलकापुर वाले पधारे थे। महापूजन में मीठे-मीठे भजन सुनाकर भावेश भाई शाह, देवराज लुनिया, हेमंत झाबक ने सबको भाव विभोर किया।

आयोजन को सफल बनाने में शांतिनाथ भगवान जैन मंदिर ट्रस्ट एवं चार्तुमास समिति काफी सक्रिय रहे। जैन श्री संघ के अध्यक्ष डॉ. भागचंद गोलछा, मोहन मालू, पारस चोपड़ा, राजेश लुनिया महेन्द्र जैन चार्तुमास समिति संयोजक जय चोपड़ा, भीखमचंद मालू, संपत चोपड़ा, उत्तम मालू, जसराज कोचर, शरद मालू, जीवन लाल गांधी, सुशील बोथरा, हेमंत झाबक, देवराज लुनिया, राहुल बोथरा, विवेक मालू, गुमान लुनिया, ललित शर्मा, अजय चोपड़ा, अभिषेक लुनिया, प्रदीप झाबक, सतीश चोपड़ा गौरव बरड़िया, राजेश बोथरा, दुष्यंत कोचर आदि का परिश्रम अनुमोदनीय रहा।

प्रेषक- राहुल बोथरा

स्वर्णनगरी जैसलमेर में ध्वजा महोत्सव

विश्वविख्यात स्वर्णनगरी जैसलमेर महातीर्थ के दुर्ग स्थित जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान व सभी जिनालयों का त्रिदिवसीय वार्षिक ध्वजारोहण महोत्सव 05 नवम्बर 2016 शनिवार को जिनाज्ञा युवा ग्रुप अहमदाबाद परिवार ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न किया।

इस महोत्सव के मुख्य अतिथि जैसलमेर के विधायक छोटुसिंह भाटी थे। इस वर्ष जैसलमेर दुर्ग के सभी जिनालयों की ध्वजा, स्वामीवात्सल्य, का संपूर्ण लाभ जिनाज्ञा युवा ग्रुप अहमदाबाद परिवार द्वारा लिया गया। इससे पूर्व भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

डूँगरसिंह भाटी, जैन ट्रस्ट जैसलमेर

गच्छाधिपति श्री
के चरणों में
भाव प्रसून

तर्ज : धरती सुनहरी अंबर नीला

दिव्यलोक सा दृश्य निराला ऽऽऽहोऽऽऽ
दिव्यलोक सा दृश्य निराला उजली दशों दिशायें
आचार्य गुरुवर आये हो मणिप्रभ गुरुवर आये
सूरि मंत्र की पीठिका को पूर्ण करके आये
आचार्य गुरुवर आये हो मणिप्रभ गुरुवर आये

अंतरा

सूरि मंत्र की इक्कीस दिवसीय करी कठिन साधना
निवी की तपस्या और मौन की आराधना
धन्य हो आपको आचार्य गुरुवर ऽऽऽहोऽऽऽ 2
रहे आशीष सदा ही हम पर
आचार्य गुरुवर आये...

गुरुवर के आने से छाई संघ में खुशियां
छाया था सूनापन अब खिल गई मन की कलियां
आपकी सरलता और मुस्कान सबके मन को भाये
आपके आने से सारा दुर्ग नगर मुस्काएं
छत्तीसगढ के गौरव को ऽऽऽहो
खरतरगच्छ के गौरव आपने बढ़ा दिया है
आचार्य गुरुवर आये...

दुर्ग नगर में देखो कैसा नव इतिहास रचा है
आचार्य पदवी के बाद पहला चौमासा मिला है
प्रथम पीठिका का भी प्रारंभ दुर्ग में ही हुआ है
उपधान तपस्वियों को भी, इसका लाभ मिला है
दुर्ग वालों का देखो कैसा अनुपम भाग्य खुला है
आचार्य गुरुवर आये...

उपधान आराधिका कु. कीर्ति बैद, रायपुर

दिनांक 7 से 10 जनवरी 2017 को शिखरजी में होगा वांचना शिविर

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि खरतरगच्छा-धिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में सम्मेतशिखरजी तीर्थ की पावन भूमि पर 7 जनवरी से 9 जनवरी 2017 तक वांचना शिविर का आयोजन होगा।

इस शिविर में धर्म, तत्वज्ञान, अध्यात्म, गच्छ इतिहास आदि विषयों पर पूज्यवरों की वांचना होगी। इस शिविर का आयोजन अखिल भारतीय श्री खरतरगच्छ युवा परिषद् के तत्वावधान में गढसिवाना-अहमदाबाद निवासी संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली की ओर से होने जा रहा है।

व्यवस्था आदि के आधार पर सीमित संख्या में श्रावक श्राविकाओं को इसमें सम्मिलित किया जायेगा। शिविर में पधारने के इच्छुक श्रावक श्राविकाऐं अतिशीघ्र सूचना प्रदान करें।

सांगानेर दादाबाड़ी जयपुर में गुरु इकतीसा व पदयात्रा

जयपुर शहर की सबसे प्राचीन संगानेर दादाबाड़ी में कार्तिक पूर्णिमा की दोपहरी को 108 गुरु इकतीसा का पाठ किया जाएगा। उसके बाद जयपुर के सभी श्वेताम्बर जैन मंदिरों के दर्शन हेतु तीन दिवसीय पदयात्रा होगी।

परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती गणिवर्य श्री मणिरत्नसागर जी महाराज साहब की निश्रा में यह सम्पूर्ण आयोजन होगा।

गणिवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म. ने प्रथम दादागुरुदेव श्री जिनदत्त सूरि की विचरण भूमि तिम्मनगढ़ क्षेत्र के जैनेतरों को संस्कारित कर, उन्हें मद्यमांसादि से छुड़ा कर जैन धर्म के आचरण में रंग दिया। तिम्मनगढ़, हिंडौन, करौली आदि क्षेत्र के हजारों की सख्या में जैनेतर लोगों को संस्कारित करने का महान कार्य उन्होंने किया है। इस क्षेत्र में गत वर्ष 14 नवीन जिनमंदिरों की प्रतिष्ठा भी करवाई। नव संस्कारित जैनों को मेतारज गोत्र भी प्रदान किया गया। इन मेतारज गोत्रियों के संस्कारों के दृढ करने एवं उन्हें जैन समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए समय समय पर संघ यात्राओं का आयोजन किया जाता रहा है। अभी हाल ही में पालीताना में हुए खरतरगच्छ महासम्मेलन के दौरान लगभग 500 लोगों का पैदल संघ पालीताना ले जाया गया था। इसी क्रम में इस वर्ष (सांगानेर दादाबाड़ी) कार्तिक पूर्णिमा से तीन दिवसीय चैत्यपरिपाटी का आयोजन रखा गया है। कार्तिक पूर्णिमा के मेले पर आयोजित गुरुदेव की पूजा के बाद मेतारज जैनों द्वारा 108 गुरु इकतीसा का पाठ किया जायेगा जिसमें जयपुर के साधर्मिक बंधुगण भी हर्षोल्लास से भाग लेंगे।

प्रेषक-गुड मॉर्निंग इण्डिया, जयपुर

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

बचपन में ही जटाशंकर की नाक का अगला हिस्सा कट गया था। सांस लेने में तो कोई तकलीफ न थी, पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो गया था। सुबह किसी व्यक्ति को वह नजर आता तो वह मुँह फेर लेता, यह कहता हुआ कि अरे! मेरा तो सारा दिन ही बिगड गया, जो सुबह ही सुबह यह नककटा नजर आ गया।

इससे जटाशंकर बहुत दु:खी हो जाता। वह कुछ बोल तो न पाता था, पर भीतर ही भीतर जलभुन जाता। एक बार सुबह ही सुबह वह व्यक्ति मंदिर से निकला और प्रसन्न होता हुआ जोर जोर से बोलने लगा- अहो! तुम लोग भले मुझसे नाकभौं सिकोडते हो। पर भगवान मुझ पर प्रसन्न हो गये हैं।

वो देखो सामने! मुझे भगवान नजर आ रहे हैं।

और इस कथन के साथ वह प्रसन्न मुख से भगवान को निहारता... उनकी भक्ति करता... आरती उतारता...। उसके इस कथन को सुनकर लोगों के मानसिक भाव बदल गये। उसे भक्तराज की उपमा दे दी। अब उसके दर्शन करके लोग प्रमुदित होते।

वह कहता- मुझे तो भगवान नजर आते ही हैं। आपको भी यदि दर्शन करने हों तो हो सकते हैं।

घटाशंकर भगवान के दर्शन की प्यास लिये उसके पास पहुँचा। उसने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा- मुझे भी भगवान के दर्शन करने हैं! मुझे क्या करना पडेगा।

जटाशंकर ने कहा- भगवान तो सामने हैं। पर तुम्हारी यह नाक है न, वही बीच में बाधा है। मेरी नाक कट गई, इस कारण भगवान के दर्शन हो रहे हैं। तुझे यदि भगवान के दर्शन करने है तो नाक कटवा दे।

घटाशंकर विचार में पड गया।

जटाशंकर ने प्रेरणा देते हुए कहा- क्या तुम नाक की चिंता करते हो! नाक बडी या भगवान के दर्शन!

घटाशंकर तैयार हो गया। उस्तरा लिया और नाक काट दी। खून बहुत निकला... दर्द अपार हुआ। पर भगवान के दर्शन होंगे, इस आनंद की कल्पना से सारा दर्द सह लिया।

वह आंखें फाड फाड कर देखने लगा। उसने जटाशंकर से कहा- भैया! मुझे तो भगवान कहीं नजर नहीं आ रहे। जटाशंकर धीरे से उसके कान में फुसफुसाया- मत बोल ऐसा! यदि ऐसा बोलेगा तो कोई तुम्हारी इज्जत नहीं करेगा। तूं तो बोल- अहा! क्या भगवान का स्वरूप है! लोग तुम्हारी पूजा करेंगे। नहीं तो नककटे की गालियां सुनोगे। नाक तो कट ही चुकी थी। अब तो उसे यही बोलना था।

संसार का यही स्वरूप है। संसार में कोई सुख नहीं है। फिर भी उसमें फँसे हुए लोग कहने को तैयार नहीं कि दु:ख ही दु:ख है। यही भ्रम फैलाते हैं कि सुख ही सुख है, इस कारण दूसरे लोग संसार में फँसते ही चले जाते हैं।

सूरीमंत्र साधना पूर्णाहूति की झलकियाँ

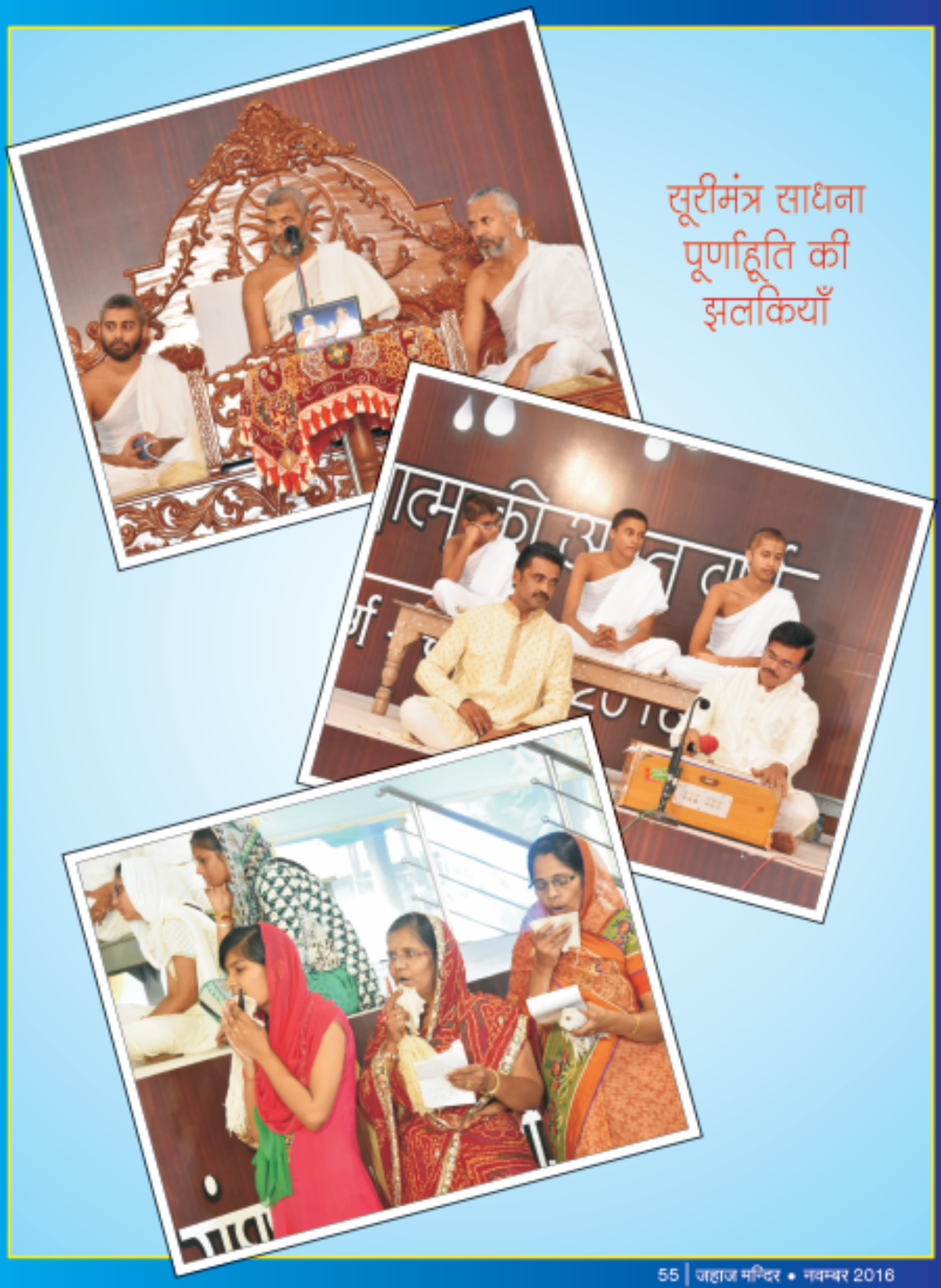

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिलजी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408